चन्दामामा
जुलाई १९६२
50 nP

जुलाई १९६२

★

विषय - सूची

★

एक प्रति ५० नये पैसे

वार्षिक चन्दा रु. ६-००

'आप हैं एक बिगड़े हुए नवाब...'

'मेरे पतिदेव एक बिगड़े हुए नवाब से कम नहीं,' बी/८, यूनियन हाउस, माहिम, बम्बई १६ की श्रीमती आर. आर. प्रभु कहती हैं, 'और कपड़ों की धुलाई पर तो इन का माथा मैला होते देर नहीं लगती। लेकिन जब से इन के कपड़े मैं ने सनलाइट से धोने शुरू किये हैं, वह भी खुश हैं और मैं भी। सनलाइट से कपड़े शानदार सफेद और उजले धुलते हैं और इस का ढेरों झाग मैल का कण कण बहा ले जाता है!

S. 10-X29 HI

हिंदुस्तान लीवर का उत्पादन

जून १९६२

मैं "चन्दामामा" लगभग सात वर्षों से लगातार पढ़ती चली आ रही हूँ। मैंने बहुत-सी पत्रिकाएँ पढ़ी, लेकिन यह पत्रिका सब को मात करती है। यदि इसमें केवल कुछ पृष्ठ-संख्या में ही वृद्धि हो जाए तो हमारी सब माँगे पूरी हो जाएँ।

हरिन्द्र कौर, कपूरथला

मैं चन्दामामा को मैं अभी अभी ही पढ़ने लगा हूँ। मैं पहले चन्दामामा को केवल बच्चों की पत्रिका समझता था परन्तु जब मैंने एक रोज यहाँ के उपाध्याय श्री. कोमल महाराज ने मुझे पढ़ने के लिये कहा तो मेरे पढ़ने के बाद मुझे मालूम हुआ की चन्दामामा एक भारतवासिक सब के पढ़ने लायक है.

रमेशचन्द्र जायसवाल, बदनावर

चन्दामामा को पढ़ने से यह मालूम होता है कि यह एक उच्चकोटि की पत्रिका है और मुझे तो यह इतना पसन्द है कि मैं उसे एक दिन में पढ़ लेता हूँ और फिर एक महिने तक इसकी बाट देखना पड़ता है। इसमें चित्र भी सुन्दर होते हैं। कृपया अगर आप उसमें चुटकुले आदि देने की कृपा करें तो बहुत अच्छा हो।

कैलाशनाथ पान्डेय, चिरमिरी

जब चन्दामामा मैं घर लाता हूँ तो मेरे भाई बहिन मुझसे ले जाते हैं। और बड़े चाव से पढ़ते हैं। मुझे इसकी निम्नलिखित कथायें बहुत पसन्द हैं भारत का इतिहास, भयंकर घाटी, गोल कटोरा भीम, देव की गवाही और अयोध्या काण्ड। आशा है आप हमेशा सुन्दर सुन्दर कथायें लिखते रहेंगे।

देवीदास सिन्धी, चन्दौसी

मैं चन्दामामा का लगभग दो साल से ग्राहक हूँ। 'चन्दामामा' हमारे घर के सभी सदस्य बड़े चाव से पढ़ते हैं। विशेषकर बच्चे तो इसके रंगीन चित्रों को देखकर खुशी से झूम उठते हैं। हमारा एक सुझाव है कि आप कहानियों के साथ साथ कोई मनोरंजन—चुटके, पहेलियाँ आदि क्यों नहीं देते?

हमारा यह मत है कि आप ये भी दें। 'भारत का इतिहास' तथा 'गोल मटोल भीम' प्रशंसनीय है।

अशोक सैनी, अमृतसर

अभी अभी "चन्दामामा" का मई अंक मिला। मुख-पृष्ठ सुन्दर है। मुख-पृष्ठ के लिए पिछले कुछ मासों से जैसा कागज प्रयुक्त किया जाता है वैसा ही सदा रहे तो उत्तम है। महाभारत पर आधारित अन्तिम-पृष्ठ का चित्र भी प्रशंसनीय है।

"भारत का इतिहास" निःसन्देह प्रशंसनीय है, इसे कुछ और विस्तृत रूप में दिया जाता तो और भी अच्छा रहता। "पार्वती परिणय" सर्वांग सुन्दर पद्य कथा है इसमें भी "वपा" के चित्र आश्चर्यजनक हैं। "भयंकर घाटी" पिछले धारावाहिक कथाओं की भांति ही प्रशंसनीय है। "भूतों का किया हुआ विवाह" अच्छी कहानी है। इसके अतिरिक्त अन्य कथाएँ भी रोचक हैं। रामतीर्थ कथा विशेषतः सुन्दर लगी।

"संसार के आश्चर्य" एकदम व्यर्थ है। इसका कोई लाभ नहीं।

मेरा एक सुझाव यह भी है कि चन्दामामा के सभी चित्र बहुरंगे होने चाहिये और संक्षेप में "चन्दामामा" एक पठनीय सुन्दर पत्रिका है।

गुलशन राय तनेजा, नई दिल्ली

अप्रैल के अंक में सबसे उत्तम कहानी रही "देव की गवाही" तथा "भूतों का किया हुआ विवाह" "सत्य की महिमा" भी रोचक, सुंदर थी तथा अन्य कहानियाँ साधारण लगीं। मुख्य पृष्ठ विशेष चित्ताकर्षक लगा।

महेशकुमार, चन्दौसी

गर्म मौसम आप को कभी परेशान नहीं करेगा....

घमौरियों से पूर्ण सुरक्षा के लिए
इस्तेमाल कीजिये

रेमी

रेमी बोरेटेड
टालकम पाउडर

* टायलट * टल्किम
* फेस पाउडर भी सुलभ है।

एकमात्र वितरक : ए.बी.आर.ए. एंड कम्पनी, बम्बई—२, मद्रास—१, कलकत्ता—१

चन्दामामा

संचालक: चक्रपाणी

कई पाठक हम से पूछते हैं कि आप "चन्दामामा" में चुटकले आदि क्यों नहीं देते?

हम चुटकले अलग स्तम्भ में तो नहीं देते, पर हास्य कथाएँ हम अक्सर देते हैं। कई पाठक लिखते भी हैं कि वे काफी रोचक होती हैं।

"चन्दामामा" कहानियों की पत्रिका है—हम हास्य भी कहानी के रूप में देने की कोशिश करते हैं। चुटकलों के देने में भी कोई आपत्ति नहीं है, पर जगह हो तब न?

वर्ष: १३ जुलाई १९६२ अंक: ११

भारत का इतिहास

सातवाहन के समकालीन होकर उनका विरोध करनेवाले थे, कलिंग के राजा। अशोक के बाद इन्होंने एक विशाल साम्राज्य की स्थापना की। कलिंग राजाओं में प्रमुख था, खारवेल। इसने मगध के राजा, बृहस्पति मित्र को पराजित किया। कहा जाता है कि इसने अपने साम्राज्य को दक्षिण में गोदावरी के पार तक विस्तृत किया। परन्तु इसके बाद कलिंग साम्राज्य का ह्रास हो गया।

तमिल देश में बहुत से राजा थे। इनमें मुख्य थे, चोल, पान्ड्य, केरल देश के राजा। आज के तन्जाऊर, तिरुचिनापल्लि और उसके आसपास के प्रान्तों में चोलों का शासन था। ईसा से दो सदी पहिले चोलों ने बड़े बड़े युद्ध किये। एलरन नामक चोल राजा ने लंका को जीता। इसकी न्यायपरता दिखाने के लिए बहुत-सी कथायें कही सुनी जाती हैं। आज के मधुरा, तिरुनल्वेली, दक्षिण तिरुवान्कूर पर पान्ड्यों का आधिपत्य था। उन्होंने यहां के व्यापार और संस्कृति को प्रोत्साहित किया। अगस्टस नामक रोमन सम्राट के पास एक पान्ड्य राजा ने अपना दूत भेजा था। केरल राज्य, पान्ड्य राज्य के उत्तर पश्चिम में वर्तमान मलाबार, कोच्चि, पूर्व तिरुवान्कूर था।

मौर्य साम्राज्य के ह्रास होते ही भारत पर विदेशीय आक्रमण करने लगे। बाक्ट्रिया के राजा डिमिट्रियोस नामक यवन राजा ने अफगानिस्तान, पंजाब, सिन्धु देशों का अधिक भाग जीत लिया। पंजाब में, शाकल नामक नगर को राजधानी बनाकर, एक और यवन राजा ने गांधार के तक्षशिला

में एक और यवन राजा ने शासन किया। परन्तु कालक्रम में इन यवन राजाओं पर पड़ोस और परिस्थितियों का इस तरह प्रभाव पड़ा कि वे या तो बौद्ध हो गये, नहीं तो वैष्णव मतावलम्बी। ईसा की पहिली सदी में ही यवनों का प्रभाव पूरी तरह समाप्त हो गया।

यवन (ग्रीक) से मुकाबला करके उनके स्थानों को लेनेवाले विदेशीय थे, शक, पह्लव, कुशान शक मध्य एशिया के थे। वहाँ से वे कुशानों द्वारा भगाये जो गये तो दक्षिण की ओर आये। वे ईसा की पहिली सदी तक अफ़गानिस्तान के दक्षिणी भाग में स्थिर हो गये थे। धीमे धीमे उनका शासन सिन्धु के दोआब और पश्चिम भारत में फैला।

ईसा की पहिली सदी में शकों के साम्राज्य के कुछ भाग पर पल्लवों ने अधिकार कर लिया था। इसके बाद भारत देश में कुछ समय तक शक और पह्लवों का राज्य चलता रहा। इनके क्षत्रप और महा क्षत्रप पद के गवर्नरों ने भिन्न भिन्न प्रान्तों में शासन किया। इन क्षत्रपों में ही एक था, जिसने एक समय में

सातवाहन साम्राज्य का कुछ भाग जीत लिया था और जो गौतमी पुत्र शातकर्णी के हाथ पराजित कर दिया गया था।

शक राजाओं में प्रमुख रुद्रदमन था। इसने १३०-१५० के बीच में शासन किया। इसका राज्य, कोंकण प्रान्त से उत्तर में सिन्धु और मारवाड़ देश तक था।

यु. ए-ची नाम के घुमकड़ ई. पू. १६५ चीन की सीमाओं में से भगा दिये गये। अक्सस की घाटियों में पांच राज्यों की स्थापना की। इनमें कुशानों के राजा,

कुजलक ने शक्तिशाली होकर एक साम्राज्य की स्थापना की। पह्नवों को पराजित करके भारत की सीमा भी इसने अपने राज्य में मिला ली। कुज के ताम्बे के सिक्कों से अनुमान किया जाता है कि उसने ईसा के पहिली सदी में राज्य किया था।

कुज के बाद विम ने राज्य किया। इसने सोने के सिक्के बनवाये। इसने शैव मत ग्रहण किया। इसने अपने सिक्कों पर "महीश्वर" नाम खुदवाया।

कनिष्ट इसके बाद राजा बना। ई. श. ७८ वर्ष में इसने ही शक वर्ष की स्थापना की। कनिष्ट की राजधानी पुरुषपुर थी (पेशावर) उसका राज्य, गान्धार से, अयोध्या, वाराणसी तक फैला हुआ था।

परन्तु कनिष्ट की कीर्ति का कारण उसकी बौद्ध धर्म के लिए की गई सेवा ही था। पेशावर में इसने एक बड़ा चैत्य बनवाया। बौद्ध ग्रन्थों के भाष्य इसने लिखवाये। "बुद्ध चरित" के लेखक अश्वघोष इसका राजकवि था।

कनिष्ट ने २३ वर्ष राज्य किया। उसके बाद वासिष्क के कुछ समय तक राज्य करने के उपरान्त हविष्क राजा बना। हविष्क का साम्राज्य, कनिष्ट के साम्राज्य से तनिक बड़ा ही मालूम होता है। इसके काल में मथुरा नगर को प्रमुखता मिली। इसके शासन के विवरण काबुल के पश्चिम में वर्धन के पास मिले हैं।

कुशानों का राज्य ९८ वर्ष चला कुशान राजाओं में अन्तिम राजा वासुदेव प्रधान था। इसने ३१ वर्ष राज्य किया। इसके शिलालेख और सिक्के मथुरा में मिले हैं। इन सिक्कों पर शिव का चित्र प्रायः देखा जाता है।

पार्वती परिणय

छठा अध्याय

अपनी आँखों के सम्मुख जिस हर ने
भस्मीभूत किया मन्मथ को
निज सौंदर्य बल उस हर को पाने
असमर्थ हो उमा तप में तल्लीन हुई।

तप से न संभव यदि
अर्धभाग तन देकर
हो कर अनुरक्त यों
पाना पति रूप में कैसे संभव?

दुहिता का शिव के प्रति
देख यह दृढ़ निश्चय
स्नेह-सनी सीख दे
लगी मेनका मनाने।

बेटी, वन प्रांत में
जाती क्यों तप-हेतु?
क्या हर नहीं हैं यहाँ
तुम को मन चाहा देंगे वरदान।

अपना यह कोमल तन
अति उज्ज्वल तपाती क्यों?
भ्रमर भारवाही पुष्प को
श्येन-भार संभव क्या?

मेनका की शिक्षा को
उमा ने न कान दिया।
वाँछित की चाह को
कौन कब सका है रोक?

पितु आज्ञा पा किया
गिरि सुता ने तपारंभ।
भूषण-वसन डाल
वल्कल से सजाया तन।

कस लिया जटा-जूट,
जप को रुद्राक्ष माल
तनपर भभूत रमा
निश्चय कर निकल पड़ी।

युगल पार्श्व जय-विजय
साथ पुर-परिजन
लहर, संगीत से
बढ़े चले जाते थे।

हिमगिरि के उत्तुंग शिखर पर
हुई तपासीन उमा
दिन-दिन वह दिव्य देह
तेजो मय भव्य बनी।

त्याग दिये अन्न-वारि
बंद युगल पलक किये
दिन-दिन वह दिव्य देह
तेजोमय भव्य बनी।

पंच अग्नियों के मध्य
बीच हिम-जल सर
पति शिव-शंकर पाने को
शैलजा विभोर हुई।

पीले तरु पातों का
भक्षण भी बंद किया,
मुनियों ने अपर्ण कह
गिरिजा का यश गा न किया।

तप कर तन सुखाया यों
शिव तन में निज तन की
संधि जोड़ देने-सा
अर्ध नारीश्वर-सा।

एक दिन एक ब्रह्मचारी
उदयारुण बिम्ब लिये
आया गिरिजा के निकट,
मन में कुछ निश्चय ले।

गौरी के समक्ष खड़ा
वरद हस्त ऊँचा कर
पूजा की भक्ति भाव से
गिरिजा ने अतिथि देव की।

समाहत तपस्विनी-से
मन में आल्हाद लिये,
अधर मंदहास लिये
शैलजा से बोला यों—

होम आदि का अभाव
तरुणी! न दीखता है तू?
तेरी घोर तपश्चर्या में
बाधा तो न होगी कुछ?

गंगोदक से भी अति पावन,
हे कल्याणी तेरे कारण
सफल हो गया शैलराज भी
मैं अब इतना मान चुका हूँ।

शक्ति से बाहर होकर
तू दृढ़ मन से तप-तल्लीना
पर मेरा ऐसा विचार है,
स्वास्थ्य जगत में श्रेयस्कर है।

तुम गिरि-तनया
सकल संपदाओं से पूर्ण
फिर जगमें क्या शेष रह गया!
तप करती जिसके पाने को?

माना, तप करती हो गिरिजे!
वर अनुकूल प्राप्त करने को।
रत्न किसी को नहीं खोजता
स्वयं उसे खोजा जाता है।

गिरिजा ने बातें सुन
गहरी निश्वास ली,
समय देखकर बटुक श्रेष्ठ ने
निज विचार अभिव्यक्त किये यों—

"तुम सौंदर्यमयी यदि गिरिजे!
किसी भाँति यह बटुक न कम है।
वरो मुझे, यदि तपासक्त हो
तो मेरी तप अर्धशक्ति लो।

गौरी सुन मौन हुई,
इंगित कर कोरों से, जया
यों बोली, सुन ब्रह्मचारी
शैलसुता हरहित तप करती है।

बातें सुन बटुक हँसा
शिवको वरण चाहती है।
फणी फफकार उठे शिवके वरण काल,
तेरी प्राण-सखी तब कर सकेगी सहन।

पार्वती, तुम सुनो शांति से
शिव उपयुक्त नहीं जानता हूँ उनको मैं
जीवन को दुखमय न करो, सोचो तो
जन्म के भिखारी से परिणय कैसे।

काम-रिपु अरसिक वह
करती क्यों व्यर्थ हठ
जाने दो मुझ को भी अन्य का वरण करो
पाकर उपयुक्त वर धन्य हो जाओगी।

रौद्र मुख कांत हुई,
बोली, बस, बटुक
जानते हो, कौन मैं।
निंदित करते हो किसे?

यह कह वह खड़ी हुई,
बटुक नहीं था वहाँ, स्वयं परमेश्वर थे।
क्रोध सब विलीन हुआ
लाज से लजा गयी।

"भद्रे, तब तपने विक्रय किया।
खोकर अपनत्व मैं सम्मुख उपस्थित हूँ
मैं ही वह शिव हूँ, हे प्यारी शिवा,
अपनाओ, आज से तुम्हारा हूँ।

शिव की सुनी बातों को शैलजा ने
आँख उठा देखा तो लगा,
मानो रजत गिरिश्रृंग पर
पूर्ण कला से ज्योत्स्ना खिलक रही।

[१२]

[क्षत्रिय युवकों की तरह वेश बदलने का निश्चय करके, केशव और जयमल ने ब्रह्मदण्डी मान्त्रिक की गुफा में से सोना चुरा लिया। उसी समय ब्रह्मदण्डी चिल्लाता अपने कमरे में से बाहर भागा। उसे पहरेवाले ने पकड़ लिया। उसने फिर साथ के पहरेदारों को बुलाया। बाद में—]

सीने पर भाला तना देख और सिपाही का चिल्लाना सुन, ब्रह्मदण्डी मान्त्रिक की नीन्द की खुमारी जाती रही। इतने में वहाँ दो तीन सिपाही और भागे-भागे आये। उसको घेर कर खड़े हो गये।

"भागने की सोच रहा था। यों देखते क्या हो, भोंको ये भाले" कहते हुए एक सिपाही ने भाला उठाया। ब्रह्मदण्डी की जान जाते जाते बची। कुछ देर तक उसके मुख से बात तक न निकली। कुछ देर बाद बड़बड़ाते, काँपते काँपते उसने कहा—"वीर सैनिको, महाशयो, मुझे मत मारो। मैं भागने की कोशिश नहीं कर रहा हूँ।"

"तुमने भागने की कोशिश नहीं की! तो यह सब क्या है! तो तुम कहते हो कि मैं झूठा हूँ।" कहते हुए पहिले सैनिक ने भाला उल्टा करके उसे ज़ोर से मारा।

भाले की चोट खाकर ब्राह्मदण्डी नीचे गिर गया। छटपटाता बोला—"वीर पुंगव, मुझे न मारो। मैं जब सो रहा था, तो मुझे गन्दा सपना आया और मैं उस सपने में बाहर भागा-भागा आ गया। गल्ती मेरी ही है। आपकी नहीं है।" ब्राह्मदण्डी रोया चिल्लाया।

परन्तु सैनिकों ने उसके हाथ पैर बाँधकर इस तरह उठाया, जैसे कोई बेंहगी उठा रहे हों, और उसे एक कमरे में एक पलंग पर डाल दिया। पलंग पर वह इतने ज़ोर से गिरा कि वह नीचे जा लुढ़का, फिर अपना शरीर झाड़ते हुए उसने कहा—"वीरो, शूरो, मुझे न सताओ। मेरे धोखेबाज़ शिष्य और उसका साथी जब मेरी पसीने की कमाई चुराकर भाग रहे थे, तो मेरी अक्ल जाती रही और मैंने ऐसा किया। सच मानो।"

"अब भी तुम्हारा दिमाग बिगड़ा हुआ है।" ब्राह्मदण्डी की ओर सन्देह की दृष्टि से घूरते हुए एक सैनिक ने कहा।

"अभी तो तुम कह रहे थे कि कोई गन्दा सपना देखकर भागे थे और अब कह रहे हो कि तुम्हारे धोखेबाज़ शिष्य और उसके साथी को पसीने की कमाई चुराता देख तुम्हारा दिमाग बिगड़ गया है, कौन-सी बात सच है!" एक और ने पूछा।

"यह फिर से पहाड़ों पर भाग जाने के लिए कोई चाल चल रहा है। यदि इसको रास्ते पर लाना है, तो राजगुरु के पास खबर भेजना अच्छा है।" एक सिपाही ने कहा।

राजगुरु का नाम सुनते ही ब्राह्मदण्डी ने काँपते हुए कहा—"निपुण योद्धाओ मुझ पर दया करो, इस आधी रात के

समय आपने राजगुरु को उठाया, तो न मालूम वे मेरा क्या करें!"

सैनिकों ने आपस में कानों कान कुछ कहा— मान्त्रिक के कमरे के दरवाज़े बन्द करके, वहाँ दो को पहरे पर छोड़ तीसरा राजगुरु के पास भागा।

राजगुरु ने सैनिक की बात सुनकर कहा—"अच्छा किया। सवेरा होते ही उसे राजा के पास लाओ। तुम अपने नायक से कहो कि मैंने कहा है कि जाकर देखे कि पहाड़ों पर, ब्राह्मदण्डी की गुफ़ा के पास क्या हुआ है।"

सूर्योदय होने से पहिले चार सैनिक ब्राह्मदण्डी मान्त्रिक की गुफ़ा के पास गये। गुफ़ा के सामने हाथ-पैर बँधे अपने दो साथियों को देखा, उन्होंने बताया कि रात क्या गुज़रा था।

गुफ़ा से जब सैनिक राजधानी वापिस आये, तो राजा और राजगुरु के सामने ब्राह्मदण्डी हाथ बाँधे खड़ा था। सैनिकों ने आकर पूरा वृत्तान्त सुनाया।

सब ध्यान से सुनने के बाद राजगुरु ने कहा—"सैनिकों को हाथ-पैर बाँधकर डालनेवाले डाकू न थे, यह केशव और जयमल की ही करतूत है। परन्तु वह तीसरा आदमी कौन था, वह नहीं मालूम हो रहा है।"

"इसमें सन्देह की क्या बात है, राजगुरु श्रेष्ठ, वह अवश्य केशव का वृद्ध पिता है। मैंने अपने गन्दे सपने के बारे में कहा था न! उसमें यह बूढ़ा नहीं दिखाई दिया था। कुछ भी हो, मेरा खज़ाना लुट गया है।" कहते कहते ब्राह्मदण्डी रो-सा पड़ा।

राजगुरु ने ब्राह्मदण्डी की प्रति दया दिखाते हुए कहा—"शोक न करो, ब्राह्मदण्डी भयंकर घाटी में खज़ाना मिलेगा।

उसमें तुम्हारा हिस्सा भी होगा, अब यह भी साफ़ हो गया है कि जो केशव हमें चाहिए था वह अभी राज्य की सीमाओं से बाहर नहीं गया है। उसे पकड़ने का प्रयत्न करें, चलो। पर यह भी साफ़ है कि वे भी भयंकर घाटी की ओर जा रहे हैं। रास्ते के खर्च के लिए उन्होंने यह चोरी की होगी।" राजगुरु ने सोचते-सोचते धीमे धीमे कहा।

ब्रह्मदण्डी ने गुस्से में फुंकारते हुए कहा—"महाराज, राजगुरु शेखर, अब मुझे जाने दीजिये। आपकी योजना के अनुसार मैं भयंकर घाटी में पहुँचकर उन दुष्ट जयमल और केशव को कालभैरव को बलि देकर, वहाँ मिलनेवाली धन-राशि ले आऊँगा।"

राजगुरु ने वहाँ खड़े सैनिकों को जाने के लिए कहा। फिर उसने राजा से कहा— "महाराज, मैंने ब्रह्मदण्डी, जितवर्मा और शक्तिवर्मा की यात्रा के लिए आज सायंकाल एक मुहूर्त निश्चय किया है। ताकि किसी को कोई सन्देह न हो, हमारे दूतों ने पहिले ही आवश्यक अफवाहें सब जगह उड़ादी होंगी।"

राजगुरु ने जैसे कहा था, सूर्योदय तक नगर में एक अफवाह फैलनी शुरु हो गई थी। वह यह कि राजगुरु के पैरों पर कोई फोड़ा निकल आया था। उसकी चिकित्सा न की जा सकी। विन्ध्याचल में मिलनेवाली एक औषधी लाने के लिए ब्रह्मदण्डी मान्त्रिक जा रहा है।—लोग कह रहे थे।

यदि लोगों को मालूम हो गया कि ब्रह्मदण्डी भयंकर घाटी की ओर उसकी विपुल धन राशि के लिए जा रहा था, तो जिन देशों में से उसको जाना था—उनके राजा, उसकी राह में अड़चनें पैदा कर सकते

थे। इसलिए ही राजगुरु ने यह अफवाह उड़ाई थी। जब कोई राजगुरु की प्राण रक्षा के लिए औषधी लाने जा रहा हो, तो उसे कोई न रोकेगा और तो और लोग उसकी मदद भी करेंगे।

कुछ भी हो, राजगुरु की चाल चल गई। वह ब्राम्हदण्डी, जो दुष्ट मान्त्रिक के नाम से बदनाम था, अब महावैद्य समझा जाने लगा। अगर वह महान वैद्य शास्त्र वेत्ता नहीं होता, तो राजगुरु क्या उसको चिकित्सा के लिए नियुक्त करते!" लोगों ने कहा।

उस दिन शाम को ब्राम्हदण्डी को विन्ध्याचल भेजने के लिए राजगुरु स्वयं नगर के द्वार के पास आया।

उसने पहिले ही दो राजकर्मचारी, जितवर्मा और शक्तिवर्मा को उसके साथ जाने के लिए नियुक्त कर दिया था। उनका काम यह था कि भयंकर घाटी में कोई खज़ाना मिले, तो कहीं ब्राम्हदण्डी स्वयं उन्हें उठा न ले जाये, देखना था। परन्तु यात्रा में यदि कोई पूछे कि वे कौन थे, तो उनको यह बताने के लिए कहा गया था कि वे उनके अंगरक्षक थे।

वह ब्राह्मदण्डी जिसको अपमान के साथ नगर में लाया गया था, उसे सम्मान के साथ नगर से भेजा जा रहा था। कई लोगों ने, जो झुन्डों में जमा हो गये थे उसके गले में मालायें भी डालीं। नृत्य और संगीत भी हुआ।

इधर जब कि मान्त्रिक ब्रह्मापुर नगर छोड़कर जा रहा था, तो उधर बन में छुपे केशव और जयमल्ल भी विन्ध्याचल की ओर जाने के लिए तैयार हो रहे थे। केशव के पिता के लाये हुए कपड़ों को पहिनकर वे दोनों क्षत्रिय युवक बन गये थे। तलवार, ढाल, भाला आदि देखकर कोई यह न कह सकता था कि उनमें से एक गड़रिया था और दूसरा मान्त्रिक का शिष्य।

इस प्रकार वे दोनों अब वेश बदलकर जा रहे थे, तो बूढ़े ने ज़िद पकड़ी कि वह भी उनके साथ आयेगा। केशव और जयमल्ल ने उन्हें बताया कि रास्ते में क्या क्या आपत्तियाँ आनेवाली थीं। इस बुढ़ापे में सैकड़ों मील पैदल जाना खतरनाक था। परन्तु तब भी बूढ़े ने ज़िद न छोड़ी।

"परन्तु तुम्हें इस रूप में कोई पहिचान ले, तो!" केशव ने पूछा।

बूढ़े ने उछलकर कहा—"नगर में जब मैं तुम्हारे लिए कपड़े खरीदने गया, तो मैं अपने लिए भी खरीद लाया था। जरा ठहरो, बताओ तो कि तुम मुझे पहिचान सकोगे कि नहीं।" कहकर बूढ़ा एक पेड़ के पीछे चला गया और दस बारह मिनट बाद फिर आ गया।

बूढ़े को देखकर जयमल्ल और केशव के आश्चर्य की सीमा न रही। रेशमी कपड़े थे। गले में रुद्राक्ष माला थी, हाथ में

माला, कानों में कुन्डल, मुँह पर विभूति। वह अब एक पंडित-सा लगता था।

"मैं अब तुम दोनों का गुरु हूँ। राजकुमारों को यात्रा पर ले जा रहा हूँ, लोग यही समझेंगे, समझे।" बूढ़े ने खुश होकर कहा।

"यह तो ठीक है गुरु, परन्तु मान लो कि हम मार्ग में किसी नगर में गये और वहाँ पंडितों ने तुम से कुछ पूछा, तो तुम क्या करोगे?" जयमल ने पूछा।

"गुरु मौनानन्द हैं। कहना कि इस यात्रा में सिवाय अपने शिष्यों से किसी और से बात न करेंगे, कह देना।" बूढ़े ने कहा।

केशव को पिता को साथ ले जाना ही उचित समझा। इस समय उसको यहाँ छोड़कर चले जाना ठीक नहीं है—अब तक ब्रह्मपुर राज्य में सबको मालूम हो गया होगा कि हम पिता पुत्र हैं। मेरे सिर की कीमत एक सामन्त राज्य है। इस लालच में यदि किसी ने मेरे पिता को देख लिया, तो मेरा पता जानने के लिए वे ज़रूर उसे सतायेंगे।

केशव ने पिता की ओर प्रेम से देखते हुए कहा—"बा...." वह कुछ कहने जा रहा था कि बूढ़े ने लाल पीले होते हुए कहा—"बाबा....नहीं....गुरु...."

केशव और जयमल उसे साथ लिये बगैर न रह सके। केशव पिता के पास आया, उसका हाथ पकड़कर, आगे कदम रखते हुए कहा—"गुरु, चलो हम अब चलें। अन्धेरा होते होते हमें कोई गाँव पहुँचना है। रात को वहीं सोकर, सवेरे हम घोड़े खरीद कर उनपर सवार होकर आगे चलेंगे। यदि राजकुमार और उनके गुरु को लोग

पैदल चलते देखेंगे, तो क्या सोचेंगे! सन्देह करेंगे। इधर उधर की अफवाहें उड़ायेंगे।"

जंगल में वे दो घंटे चले, अन्धेरा होते होते वे एक गाँव में पहुँचे। जब वे गली में जा रहे थे, तो चबूतरे पर उन्होंने लोगों की जो बातें सुनीं, तो उनको भय और आश्चर्य हुआ।

"ब्रह्मदण्डी मान्त्रिक दो अंगरक्षकों को लेकर विन्ध्याचल की ओर जा रहा है। वहाँ एक औषधी है, उस औषधी से राजगुरु का फोड़ा ठीक करने जा रहा है, जो अभी तक कोई ठीक न कर सकता था।"

"इसमें कोई धोखा है। हम क्योंकि राजकुमार हैं, लोगों की बातों में हमें दखल नहीं देना चाहिए।" जयमल्ल ने कहते हुए केशव को संकेत किया। चबूतरे पर जमा हुए लोगों से पूछा—"यहाँ कहीं कुछ भोजन मिल सकेगा?"

यह प्रश्न सुनते ही एक वृद्ध ने सामने आकर कहा—"होटल यहीं पास में है। पर मुझे डर है कि वहाँ आपको कुछ मिलेगा कि नहीं। राजा की आज्ञा के अनुसार वहाँ ब्रह्मदण्डी नामक बड़ा वैद्य और उनके दो अंगरक्षक आज रात को आने जा रहे हैं।"

यह सुनते ही जयमल्ल और केशव का दिल बैठ-सा गया। परन्तु बूढ़े ने झट कहा—"यदि यही बात है कि देश भ्रमण पर निकले राजकुमार इस तरह के होटलों में ठहरें, यह कहाँ लिखा है? अरे शिष्यो, चलो चलें।" कहकर वे आगे बढ़े।

[अभी है]
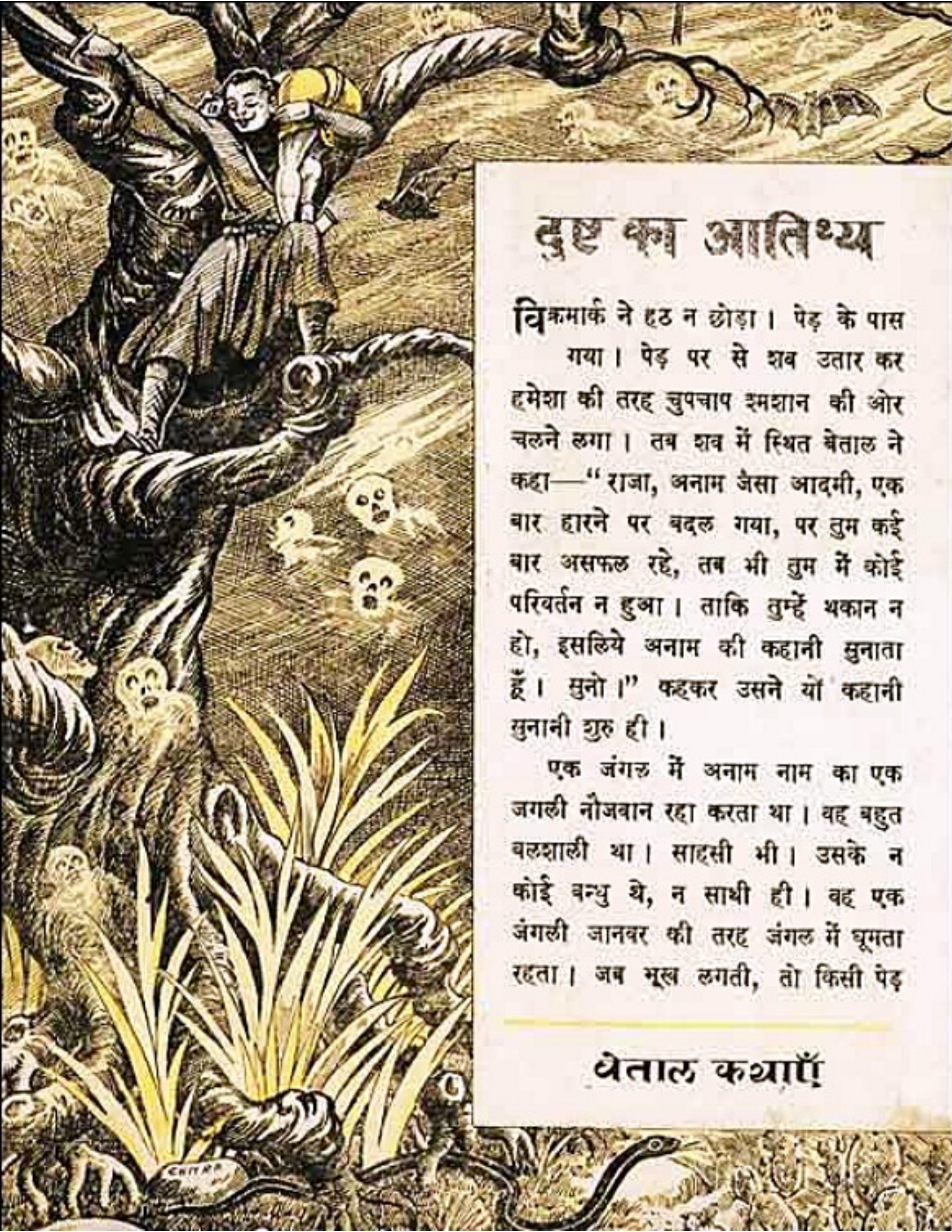
दुष्ट का आतिथ्य

विक्रमार्क ने हठ न छोड़ा। पेड़ के पास गया। पेड़ पर से शव उतार कर हमेशा की तरह चुपचाप श्मशान की ओर चलने लगा। तब शव में स्थित बेताल ने कहा—"राजा, अनाम जैसा आदमी, एक बार हारने पर बदल गया, पर तुम कई बार असफल रहे, तब भी तुम में कोई परिवर्तन न हुआ। ताकि तुम्हें थकान न हो, इसलिये अनाम की कहानी सुनाता हूँ। सुनो।" कहकर उसने यों कहानी सुनानी शुरु की।

एक जंगल में अनाम नाम का एक जगली नौजवान रहा करता था। वह बहुत बलशाली था। साहसी भी। उसके न कोई बन्धु थे, न साथी ही। वह एक जंगली जानवर की तरह जंगल में घूमता रहता। जब भूख लगती, तो किसी पेड़

के फल खा लेता। जब कोई जानवर मिलता, तो उसका शिकार करता, जब थक जाता, तो किसी पेड़ पर नहीं तो किसी नदी के किनारे सो जाता।

वह यों असभ्य जीवन व्यतीत कर रहा था। उसके पास एक बड़ी छुरी और भाला था। एक दिन वह नदी किनारे सोकर जो उठा, तो उसे पास ही एक हरिण दिखाई दिया तुरत वह अपनी छुरी और भाला लेकर उसके पीछे भागा। क्योंकि वह हरिण के समान भाग सकता था, इसलिये वह बहुत दूर तक हरिण को खदेड़ता गया।

हरिण भागता भागता अनाम को एक रेगिस्तान में ले गया। वहाँ पहाड़ पत्थर के सिवाय कुछ न था। जब वह रेगिस्तान में बहुत दूर गया तो हरिण कहीं गायब हो गया। तब जाकर अनाम को मालूम हुआ कि वह कहाँ था। जहाँ नजर जाती, वहाँ तक सिवाय पत्थरों के कहीं एक पेड़ भी न दिखाई दिया। दुपहर की तपती गरमी थी। क्योंकि अनाम बहुत दूर भागा था और सवेरे से उसने पानी भी न पिया था, वह थक गया और भूख और प्यास से वह विह्वल हो उठा।

वह सोच ही रहा था कि उन पत्थरों में उसकी मौत होकर रहेगी कि उत्तर की ओर भूमि पर एक हरी लकीर और उसके बाद धुँआ दिखाई दिया। उसकी जान में जान आई। हो सकता है कि वहां पेड़ वगैरह हों। जाती जान को बटोरकर अनाम जैसे तैसे उत्तर की ओर चलता चलता कुछ देर बाद एक वन में पहुँचा।

वन के एक ओर एक छोटा नाला बह रहा था। नाले के किनारे किनारे बहुत-से फलों के पेड़ थे। अनाम नदी में कूदा। ठंडे पानी से उसने प्यास बुझाई, प्राण उसको वापिस आते लगे।

प्यास बुझाकर ऊपर आते ही अनाम को एक कुटीर और उसके चारों ओर फूलों के पौधे दिखाई दिये। वह किसी ऋषि का आश्रम-सा लगता था। यह सोच कि उसे वहाँ कुछ खाने को मिल सकेगा, अपने बल और पराक्रम पर गर्व करता, सीना तानकर उसने कुटीर में पैर रखा।

कुटीर के अन्दर किसी ऋषि का दीखना तो अलग, उसे एक बहुत ही सुन्दर मन्मथ-सा युवक और अप्सराओं को भी मात करनेवाली स्त्री दिखाई दी। उन्होंने वल्कल वस्त्रों के बदले राजोचित अच्छी पोषाक पहिनी हुई थी, चटाई पर न बैठकर रत्न-खचित कालीन पर आराम से बैठे थे। युवक की अभी अभी मूँछे आ रही थीं और युवती उससे कुछ बड़ी थी।

"शायद कोई अतिथि हैं। आइये, पधारिये! बहिन, इसको पानी दो।" युवकने कहा। युवती उठी और सोने के पात्र में पानी लाकर अनाम को दिया।

अनाम तो जंगली जानवर की तरह था। असभ्य था। युवती को देखते ही वह मुग्ध हो उठा। उसकी ओर ताकते

बताया जायेगा कि मैं पाँच सौ योद्धाओं के समान हूँ।" अनाम ने घमंड से ऊंची आवाज में कहा।

"मेरा नाम सुमित्र है। यह मेरी बहिन माधवी है। हम विशाल राजा के बच्चे हैं। हमारा भाई राज्य कर रहा है। यह मेरे पिता का आश्रम है। उनके गुज़र जाने के बाद हम यहाँ रह रहे हैं, ताकि यह आश्रम गिर गिरा न जाये। हमें राजकीय भोग-विलासों की अपेक्षा प्राकृतिक सौन्दर्य ही अधिक आनन्द देता है।" युवक ने कहा। "तो, मैं तुम्हारी बहिन से विवाह कर लूँगा।" अनाम ने कहा।

"हम दोनों विवाह भी नहीं करना चाहते हैं।" सुमित्र ने कहा।

अनाम गरमाया—"कौन तुम्हारी चाह की परवाह करता है। मैं कह जो रहा हूँ कि मैं शादी करूँगा।"

"तुम अतिथि के धर्म का उलंघन कर रहे हो। अगर तुम दुष्टता से कोई काम इस आश्रम में करना चाहो, तो पहिले मुझे जीतना होगा! चलो बाहर ज़रा हम अपना बल आजमा लें।" सुमित्र कहता एक तलवार लेकर कुटीर से बाहर आया।

हुए उसने कहा—"क्या सूरत पाई है! कितनी सुन्दर है, आज मेरा भाग्य खिल उठा है।"

तब युवक ने उससे कहा—"आप कौन हैं, हमें नहीं मालूम है। आप हमारे घर आये हैं, इसलिए आपका आतिथ्य करना हमारा धर्म है। हमारा आतिथ्य स्वीकार करके आप अपने रास्ते चले जाइये।" सुन्दर युवक ने उसको हल्की-सी फटकार बतायी।

"मेरा नाम अनाम है। मैं बड़ा बीर हूँ। चाहे तुम किसी से भी पूछ लो, तुम को

अनाम का पारा चढ़ गया। "अरे ये छोकरा मुझ से लड़ेगा!" सोचकर, तल्वार निकालकर वह सुमित्र की ओर शेर की तरह लपका। मगर तुरत उसके हाथ की तल्वार दस गज दूर जा गिरी। इस पर ही अभी वह आश्चर्य कर रहा था कि सुमित्र ने अपनी तल्वार नीचे फेंक दी। बाँए हाथ से उसकी कमर पकड़ी, पिल्ले की तरह उसे ऊपर उठाया, उसे हवा में उठा फेंका और फिर उसे पकड़ लिया।

अनाम घबरा गया। उसने एक क्षण सोचा—"यह सच नहीं है। कोई सपना है।" फिर सोचा—"यह मनुष्य नहीं है, छोटे लड़के के रूप में ब्रह्मराक्षस है।"

सुमित्र ने अनाम को नीचे उतारकर कहा—"मैं तुम्हें यूँ मार सकता हूँ पर अतिथि को मारना अधर्म है। यही नहीं, मेरी तुमसे कोई शत्रुता नहीं है। आकर भोजन करो और जो कुछ हम दें, वह लेकर जा सकते हो।"

अनाम भीगी बिल्ली बन गया। सुमित्र के साथ उसने कुटीर में प्रवेश किया। माधवी ने उसको अच्छा भोजन परोसा। सुमित्र अपनी जगह जा बैठा। जब तक वह भोजन करता रहा उसकी तरफ़ उसने देखा तक नहीं, वह कुछ पढ़ता रहा।

भोजन के बाद माधवी ने उसको अच्छे कपड़े, कुछ खाना और धन देकर कहा—"यह लो भाई, जब तक अनाम वहाँ रहा, उसे ऐसा लगा जैसे वह कोई कीड़ा-मकोड़ा हो और उनको आतिथ्य देनेवाले कोई देवता थे। उसने यह सोचा कि यदि उसने उनसे स्नेह किया तो वह भी सुधर जायेगा। जब भाई बहिन बातें कर रहे थे तो उसने सोचा कि क्या अच्छा होता

यदि वह भी उनकी तरह बातें कर पाता। परन्तु उनके आतिथ्य के पूरा होने पर वह एक क्षण भी उनके सामने न खड़ा रह सका, क्या मुँह लेकर ऐसा करता! वह उन दोनों के सामने सिर झुकाकर विदा लेकर अपने जंगल में चला गया।

उसके बाद अनाम ने अपना एकाकी जीवन समाप्त किया। वह और लोगों के बीच गया। इस एक अनुभव से उसमें इतना परिवर्तन आ गया कि जल्दी ही उसके साथ के जंगलियों ने उसे राजा बना लिया और उसके नेतृत्व में उन लोगों ने भी अपने जीवन बदल लिये।

बेताल ने यह कहानी सुनाकर पूछा—"राजा अनाम में परिवर्तन आने का कारण क्या सुमित्र का बल-पराक्रम था? या उसका व्यवहार? यदि तुमने इन प्रश्नों का उत्तर जान बूझकर न दिया, तो तुम्हारा सिर टुकड़े टुकड़े हो जायेगा।"

इस पर विक्रमार्क ने कहा—"हारनेवाला केवल इसलिए कि वह हार गया था, नहीं बदल जाता। विजय की अपेक्षा पराजय ही मनुष्य को पशु-तुल्य बना देती है। सुमित्र यदि केवल बल से ही अनाम को पराजित करता, या कोई और चालें चलता, वह माधवी को उठा ले जाता। सुमित्र का केवल बल से जीतना उतना मुख्य नहीं है। उसने अनाम पर नैतिक विजय भी पायी थी। इसलिए अनाम में इतना परिवर्तन आया।"

राजा का इस प्रकार मौन भंग होते ही, बेताल शव के साथ अदृश्य हो गया और पेड़ पर जा बैठा।

[कल्पित]

नौकर की चाल

एक गाँव में एक मामूली किसान रहा करता था। चूँकि उसका विवाह नहीं हुआ था, इसलिए उसने घर का काम करने के लिए एक रसोइया रख रखा था। यह रसोइया, खाना बनाने में चतुर था। इसलिए किसान को भोजन आदि के बारे में कोई कष्ट न था।

आमों का मौसम आया। एक दिन किसान किसी काम पर जा रहा था कि उससे एक परिचित किसान ने कहा—"बड़े बढ़िया आम मँगवाये हैं। दो चार ले जाओ। घर जाकर खाओ, तब पता लगेगा कि ये कितने अच्छे हैं।" उसने उसको दो आम दिये। किसान ने इतने बढ़िया सुगन्धीवाले आम कभी देखे भी न थे। वह तुरत घर वापिस चला गया। आमों को अपने रसोइये को देखकर कहा—"इनको अच्छी तरह धो-धाकर काटकर रखो। मैं अभी आया।" कहकर वह चला गया।

रसोइये ने उनको काटते हुए यह जानना चाहा कि उनका स्वाद कैसा था। उसने एक टुकड़ा मुख में डाल लिया। स्वाद वर्णनातीत था। आम के टुकड़ों में से यदि मैंने दो चार टुकड़े खा भी लिए तो किसको क्या मालूम होगा, सोचकर उसने दो टुकड़े और मुख में डाल लिए। ज्यों ज्यों वह खाता जाता था, आम का स्वाद बढ़ता जाता था। दो आमों को काटते काटते उसने आधे से अधिक टुकड़े मुख में डाल लिये। बचे टुकड़ों को देखकर रसोइया डरा।

क्या किया जाय? मैंने टुकड़ों में से कुछ खा लिए हैं। यह मालिक के लिए

अक्षम्य अपराध होगा। झूठमूठ कुछ कहना ही होगा। छोटे झूठ की अपेक्षा बड़ा झूठ अच्छा है। कहा जा सकता है कि दोनों आम कोई ले गया था। यह कहने की सोचकर रसोइये ने बाकी टुकड़े भी खालिये। छिलके और गुठली उसने ऐसी जगह छुपा दिये, जहाँ कोई मनुष्य देख नहीं सकता था। थाल आदि धोकर मालिक की प्रतीक्षा करने लगा।

इस बीच किसान अपना काम करके घर आ रहा था कि उसे कोई साधु दिखाई दिया। उसको देखते ही किसान ने सोचा कि क्यों न उसको कुछ आम के टुकड़े देकर पुण्य कमाया जाय!

साधु से पूछकर मालूम कर लिया कि वह कहीं दूर देश का था। उसने उससे कहा—"स्वामी, आप हमारे घर आइये। दस मिनट से अधिक हम आपको अपने यहाँ न रखेंगे।"

साधु मान गया और किसान के साथ चला आया। किसान ने उसको बरान्डे में बिठाकर अन्दर जाकर रसोइये से कहा—"एक साधु को बुलाकर लाया हूँ। क्या आम काटकर तैयार रखे हैं! उन्हें भी कुछ टुकड़े देंगे।"

"टुकड़े कैसे काटूँ। चाकू बड़ा खुन्डा है।" उसने एक खुन्डा चाकू निकालकर मालिक को दिखाया।

"तो दो, मैं अभी इससे तेज़ करकर लाता हूँ। घर बुलाकर लाये साधु को खाली हाथ कैसे भेजूँ!" कहकर किसान चाकू लेकर पिछवाड़े में गया और एक पत्थर पर घिस घिसकर उसे जल्दी जल्दी तेज़ करने लगा।

इस बीच रसोइये ने वरान्डे में बैठे साधु से पूछा—"आपने इन्हें कहाँ देख लिया! क्या आप इनको नहीं जानते!"

"मैं कैसे जान सकता हूँ! मैं यहाँ नया हूँ। मैंने इससे पहिले तुम्हारे मालिक को कभी देखा भी न था।" साधु ने कहा।

"देखिये, ये शक्ति पूजा करते हैं। जब आप जैसे साधु दिखाई देते हैं, तो उनके कान काटकर नैवेद्य चढ़ा देते हैं। इस तरह उन्होंने बहुतों का किया है। सुनिये तो, वे चाकू तेज़ कर रहे हैं। वे चाहते हैं कि जब वे कान काट रहे हों तो आपको कष्ट न हो।" रसोइये ने कहा।
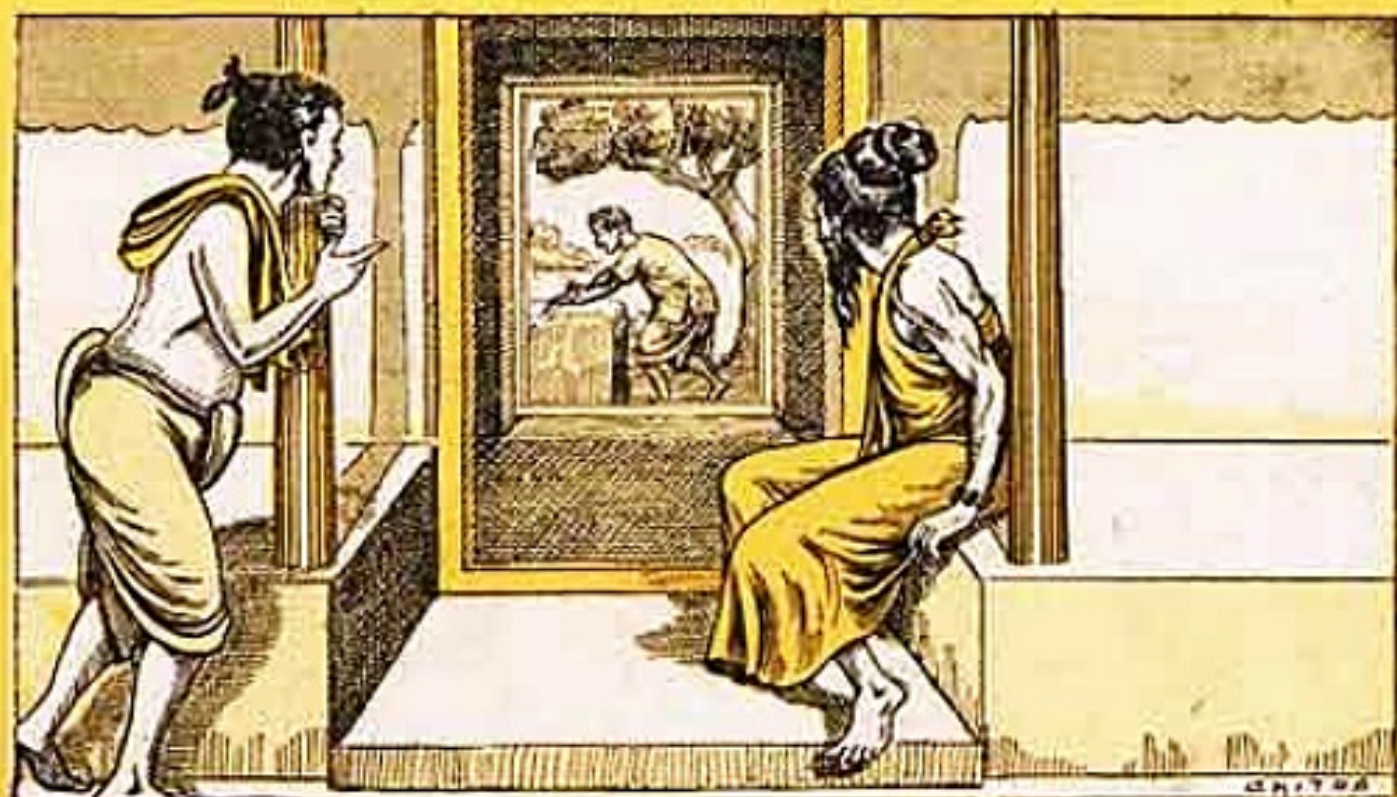
यह सुनने के बाद साधु ने वहाँ एक क्षण भी न रहना चाहा। वह वहाँ से चला गया।

थोड़ी देर बाद चाकू लेकर किसान अन्दर आया। उसने रसोइये से कहा—"यह लो, मैंने चाकू तेज़ कर दिया है। जल्दी आम काटो। साधु बहुत देर से इन्तज़ार कर रहा है।"

"आम कहाँ हैं? और साधु भी कहाँ है? आप पिछवाड़े में गये, वह अन्दर आया, दो आम लेकर जेब में डालकर चलता हुआ।" रसोइये ने कहा।

"दोनों फल ले लिये। कम से कम एक तो रखने को कहते, स्वाद तो देखते।" किसान ने कहा।

"मैं बुलाता ही रह गया और वह बिना सुने भागता चला गया।" रसोइये ने कहा।

किसान हाथ में चाकू लेकर गली में भागने लगा। थोड़ी दूर बाद उसे साधु दिखाई दिया।

"स्वामी, एक क्षण रुकिये।" किसान ने वह हाथ उठाया, जिसमें उसने चाकू पकड़ रखा था।

साधु ने जो पीछे मुड़कर देखा तो वह घबरा गया। वह और जोर से भागने लगा।

"स्वामी, दोनों मत दीजिए, कम से कम एक तो दीजिये। एक काफ़ी है।" किसान जोर से चिल्लाया।

यह सुन स्वामी और डरा। स्वामी यह सोच कि यह दुष्ट कम से कम एक कान देने के लिए उसे कह रहा था, वह और ज़ोर से भागा। किसान उसे न पकड़ सका। वह निराश हो घर वापिस आ गया। रसोइया खुश था कि उसकी चाल चल गई थी।

सत्यवादी

असत्यवादी की कहानी सुनने के बाद बच्चों ने पूछना शुरु किया। "सच कहना सरल, झूठ कहना मुश्किल है क्या बाबा!" "फिर झूठ बोलनेवाले बच्चों को क्यों मार पड़ती है!" तो बाबा, क्या हम भी अब से झूठ बोला करें!"

बाबा, कुछ मुस्कराया। फिर सुंघनी लेकर, नाक में रख, हाथ झाड़कर कहने लगा। "अरे झूठ कहने में भी क्या दिक्कत है! यदि मैं कहूँ कि मैंने न कहानी सुनाई, न तुमने सुनी, तो क्या वह झूठ नहीं हो जायेगा! तुमने एक बात देखी कि नहीं सत्यवादी ने भी आसानी से झूठ बोल दिया था! वह इसलिए नहीं हारा था कि वह झूठ बोल नहीं पाया था।

बाबा की बात अभी पूरी न हुई थी। बच्चे चिल्लाये—"विश्वास न कराने पर...."

"हाँ, यह बात है, झूठ को सच की तरह कहकर विश्वास कराना मुश्किल है, क्या ऐसे झूठों से कोई उपयोग होगा! सिवाय राजा के मनोरंजन के। जब तुम कहते हो कि सच कहना कितना आसान है। कभी तुमने सोचा कि सच मालूम करना कितना कठिन है! सच तो भगवान जानते हैं, पानी ढलान जानता है, कभी यह बात सुनी। यही नहीं सच से कितने फ़ायदे हैं। इसलिए असत्यवादी की अपेक्षा सच कहा जाय, तो सत्यवादी कितना ही बड़ा है।" बाबा ने कहा।

"तो राजा सत्यवादी को कम तनख्वाह क्यों देते थे!" बच्चों ने पूछा।

"वह राजा यूँ ही मज़े के लिए झूठ सुना करता। उसे सच जाननेवाले की ज़रूरत ही न थी। इसलिए सत्यवादी

उसके यहाँ नौकरी छोड़कर कहीं और चला गया।" बाबा ने कहा।

"वहाँ क्या हुआ, बाबा?" बच्चों ने पूछा।

"अरे सब्र करो, सुनाता हूँ। यह जो नया राजा था इसने भी सत्यवादी को कम वेतन पर रखा। यानि अपनी बुद्धिमत्ता दिखाकर, राजा को खुश करने की सोच रहा था वह।" यों कहकर बाबा ने कहानी सुनानी शुरु की।

राजा के पास एक न्यायाधिकारी था। वह बुरा न था, पर बड़ा सनकी था। अगर कोई शिकायत लाता, तो कहता—"गवाही, गवाही" हर शिकायत में जिस तरफ़ गवाही अधिक होती उसी तरफ़ वह अपना फैसला दे देता। बड़े बड़े मुकद्दमों को वह मिनटों में यूँ सुलझा देता। परन्तु वह न्यायाधिकारी सत्यवादी न था, साक्षीवादी था।

नौकरी में लगने पर, सत्यवादी इस न्यायाधिकारी का व्यवहार ध्यान से देखने लगा। अदालत में हमेशा गवाहों का जमघट रहता रोज, सौ मुकद्दमों का फैसला दे दिया जाता। परन्तु रोज मुकद्दमों की संख्या बढ़ती ही जाती थी, कम न होती थी। राज-सभा में हर कोई कहता—"इस तरह का न्यायाधिकारी कभी न होगा" उसकी खूब प्रशंसा किया करते। राजा उसको अच्छी तनख्वाह दे रहा था। नगर में हर कोई यही कहता कि यह भी क्या न्याय है?

न्यायाधिकारी कैसा सनकी था, यह सत्यवादी जल्दी ही जान गया। ऐसी बातों में भी जहाँ गवाही होने की गुंजाईश न थी, उन बातों का भी फैसला वह गवाही के आधार पर किया करता।

एक वार एक ने किसी की गाय चुरा ली। जिसकी गौ चोरी गई थी, उसने शिकायत की। गौ का चुरानेवाला सौ गवाहों को लाया। जब उन सब ने कहा कि उसने गौ नहीं चुराई थी, तो न्यायाधिकारी ने फरियाद रद्द कर दी। गौ को चुरानेवाले को देखनेवाले होते हैं। पर कहीं न चुरानेवाले को देखनेवाले भी होते हैं!

यह सब देख राजा के पास गया। "महाराज, मुझे ऐसा लग रहा है कि हमारे न्यायाधिकारी के फैसले कुछ ऊँटपटांग हैं। सच मालूम करने के लिए उनमें न इच्छा है न लगन ही। बुजुर्ग कहते हैं कि खोदते खोदते तथ्य मालूम होता है। हमारे न्यायाधिकारी, केवल गवाहों पर विश्वास करके, बिना सच मालूम किये अनेक मुकद्मों में गलत फैसले देते हैं। यह आपकी कीर्ति में कलंक है।"

राजा को यह सुनकर अजरज हुआ। "अच्छा, जब तुम्हें यह मालूम हो कि न्यायाधिकारी ने ठीक न्याय नहीं दिया है, तो तुम जैसा उचित समझो, वैसा न्याय करो।" राजा ने कहा।

इसके कुछ दिनों बाद एक बात हुई। राजा, हर रोज शाम को बाग में टहलने के लिए जाता, वहाँ पोतों के साथ खेल खाल कर घर आया करता। एक दिन जब राजा बाग में गया, तो पोते हमेशा की तरह खेल रहे थे। राजा आकर संगमरमर के बेन्च पर बैठा ही था कि पोतों ने आकर घेर लिया। उसी समय माली, कुछ फल धो धाकर राजा के सामने रखकर, चला गया। राजा ने उन फलों को काटकर पोतों को दिया, अन्धेरा होने तक उनसे खेल खाल कर उनसे पहिले ही घर चला गया।

राजा के आने के आध घंटे बाद बच्चे भी आये। उनमें से एक रो रहा था। उसकी अंगुली कट गई थी और खून बह रहा था। जब कारण पूछा गया तो बताया गया कि संगमरमर के बेन्च पर कुछ पड़ा था, उससे लड़के की अंगुली कट गई।

राजा ने तब लड़के की अंगुली की मरहम पट्टी करवाई और अगले दिन उसने यह बात न्यायाधिकारी से कही। सब सुनकर न्यायाधिकारी ने कहा—"गल्ती माली की है। इसमें कोई सन्देह नहीं है। यह उसी की जिम्मेवारी है कि बाग साफ़ रखे। यदि आपके और बच्चों के आसन को साफ़ रखता तो ऐसी कोई चीज़ न रह जाती, जो चुभ सकती थी। इसलिए माली की असावधानी के लिए ज़रूरी सज़ा दूँगा। उसका अपराध तो सिद्ध हो ही रहा है।"

ये बातें सुनकर सत्यवादी को आश्चर्य हुआ। लड़के की अंगुली कट जाने को आधार मानकर माली का अपराध सिद्ध कर दिया। सुनवाई भी नहीं की।

"महाराज, यह सुनवाई नहीं कही जा सकती। माली को सज़ा देने से पहिले उसको बुलवाइये तो।" क्योंकि राजा ने उसको किसी भी सुनवाई में दखल देने का अधिकार दे रखा था, इसलिए उसने माली को बुलवाया। उसने उससे प्रश्न करके मालूम किया कि रोज़ तीन बार वह बाग ठीक साफ़ करता था, पिछले दिन ही राजा के आने से पहिले ही बाग के सब आसनों को ठीक किया था।

तब सत्यवादी ने नौकर को बुलाकर कहा—"कल राजा जिस आसन पर बैठे थे उस पर कुछ था, जो राजकुमार के हाथ में चुभ गया। उस चीज़ को ज़रा खोजकर तो लाओ।"

नौकर जाकर एक छोटा-सा चाकू लाया। वह राजा का था। कल उन्होंने उससे फल काटा और उसे वहीं छोड़ दिया। अन्धेरे में बच्चे ने उसी से अंगुली काट ली।

यह बात मालूम कर लेने के बाद सत्यवादी ने राजा से कहा—"देखा, महाराज, यदि न्याय किया जाय तो दण्ड आपको दिया जाना चाहिए था, न कि माली को। इसीलिए लोग कहते हैं कि अप्रिय सत्य नहीं कहना चाहिए।"

राजा ने सत्यवादी की प्रशंसा की, उसको भी न्यायाधिकारी के जितनी तनख्वाह दी। और उसे न्यायालय में जो कुछ होता था उसको देखने के लिए आज्ञा दी।

थोड़ा समय बीत गया। एक दिन शाम को राजा बाग में गया। हमेशा की तरह उसने पोतों के साथ कुछ समय बिताया। फिर घर की ओर चल दिया। वहाँ उद्यान के द्वार के पास पहुँचते ही वहाँ के पहरेदारों में से एक राजा को देखते ही तलवार निकालकर चिलाया—"मारो, मारो!" उसने तलवार राजा पर फेंकी। तलवार लगते ही राजा का मुकुट नीचे गिर गया।

राजा को पहिले बड़ा आश्चर्य हुआ। फिर बड़ा क्रोध आया। परन्तु इससे पहिले कि वह कुछ करता कि बाकी सैनिकों ने उस पहरेदार को पकड़ लिया। उसे बाँध दिया।

"इस दुष्ट को कैदखाने में डाल दो। इसे तुरत सजा देने का इन्तजाम करेंगे।" कहता राजा अपने महल में गया। उसने न्यायाधिकारी और सत्यवादी को बुलाकर जो कुछ गुजरा था, बताया।

सब सुनकर न्यायाधिपति ने कहा—"यह राजद्रोही है। हत्यारा है। इसका सिर कटवादें।" उसने कहा।

सत्यवादी को लगा कि पहरेदार का अपराध सिद्ध कहीं किया गया था। यदि वह सचमुच राजा को मारना चाहता था, तो ऐसे समय हत्या करने की कोशिश न करता, जब पाँच दस लोग थे। इसलिए सत्यवादी कुछ लोगों को साथ लेकर कैदखाने में गया और वहाँ उन्होंने पहरेदार से बातचीत की।

उसने रोते हुए कहा—"मैं महाराजा को क्यों मारना चाहूँगा? उनकी पगड़ी में मुझे सांप दिखाई दिया। यह डरकर कि कहीं वह राजा को काट न दे, मैंने तलवार फेंकी। इससे अधिक तो मैंने कुछ भी नहीं किया है।"

सत्यवादी वहाँ से बाग में गया उसने वह जगह टटोली। जहाँ पगड़ी गिरी थी, वहाँ उसे सचमुच एक छोटा सांप दिखाई दिया। परन्तु वह वास्तविक सांप न था। बच्चों का खेलनेवाला सांप था। राजा के पोतों ने खेलते खेलते उसे राजा की पगड़ी में छुपा दिया था। यह बात उनके पोतों से बात करके मालूम कर ली गई। जैसा कि सत्यवादी ने सोचा था, पहरेदार राजद्रोही तो क्या बड़ा राजभक्त निकला।

यह सब सत्यवादी ने विस्तारपूर्वक राजा से कहा तो वह जान गया कि न्यायाधिकारी कितनी गल्ती कर रहा था। उस जैसे को उस पद पर रखने से बहुत-सी आपत्तियाँ टल सकती थीं। इसलिए उसने सत्यवादी को तुरत न्यायाधिकारी नियुक्त कर दिया उसे अच्छी तनख्वाह भी दी।

बाबा ने यह कहानी सुनाकर कहा—"यानि, झूठ को सच के रुप में कहने की अपेक्षा सत्य को जाननेवाला ही बड़ा है।"

चतुर बीरबल

[२]

बीरबल की बुद्धिमत्ता के बारे में और देशों में भी कहा सुना जाने लगा। उसकी कीर्ति फारस तक पहुँची। इसलिए फारस के राजा ने अकबर के पास खबर भिजवाई कि बीरबल को उसके दरबार में एक बार भेजे। अकबर ने खुश होकर बीरबल को सपरिवार फारस भेजा।

यह जानते ही कि बीरबल दरबार में आनेवाला था, उसकी बुद्धिमत्ता परखने के लिए फारस के बादशाह ने एक व्यवस्था की। उसने सब दरबारियों को अपने जैसे कपड़े पहिनाये और वे सब जब बैठे गये, तो बीरबल को दरबार में घुसने के लिए कहा गया। दरबार में घुसते ही वह जान गया कि उसकी परीक्षा ली जा रही थी और उसकी जिम्मेवारी थी कि वह पता लगाये कि कौन बादशाह था। तुरत उसे मालूम हो गया कि बादशाह कौन था। वह बादशाह की ओर बढ़ा उसके सामने खड़े होकर, झुक कर सलाम किया। बादशाह को बीरबल की बुद्धिमत्ता पर आश्चर्य हुआ और आनन्द भी। उसने उसका खूब स्वागत किया। फिर उसने बीरबल से पूछा—"तुम मुझे कैसे पहिचान सके!"

"सब की नजरें आप पर थीं, आपकी नजर किसी पर न टिककर सब की ओर घूम रही थी। इसलिए मैं आसानी से जान गया कि दरबार में आप ही सब से मुख्य व्यक्ति हैं।" बीरबल ने कहा। फारस के बादशाह ने उसको "बुद्धि सागर" की उपाधि दी।

सोमदेव

एक बार अकबर के दरबार में यह बात उठी कि अन्धों की संख्या कितनी थी। अकबर ने इस बारे में बीरबल से पूछा।

"अगर सच कहा जाये, तो संसार में अन्धों की संख्या बहुत बड़ी है।" बीरबल ने कहा।

अकबर ने चकित होकर पूछा—"क्या तुम यह साबित कर सकते हो?"

"कल साबित करूँगा" बीरबल ने कहा। अगले दिन बीरबल एक खाट की चौखट, रस्सी लेकर, अकबर को साथ लेकर नदी के पास गया। वहाँ खाट उतारकर, उसमें रस्सी लगाने लगा। यह अजीब बात देखकर अकबर ने आश्चर्य में पूछा—"यह क्या कर रहे हो?" बीरबल ने एक कागज़ पर अन्धों की सूची में पहिले पहल अकबर का नाम लिखा।

वहाँ बहुत से लोग आये। उनमें से जिस किसी ने पूछा—"क्या कर रहे हो?" उनका नाम उसने अन्धों की सूची में लिख लिया। और जिन्होंने पूछा—"क्या यह खाट तुम अपने सोने के लिए बुन रहे हो?" उन सब का नाम उसने आँखोंवालों में लिख लिया।

फिर दोनों सूचियों को अकबर को दिखाकर बीरबल ने कहा—"आपने देख लिया न आँखोंवालों की अपेक्षा अन्धे कितने अधिक हैं?"

"मुझे अन्धों की सूची में सब से पहिले क्यों लिखा?" अकबर ने पूछा।

"मुझे खाट बुनते देखकर भी आपने पूछा था न कि मैं क्या कर रहा था? औरों ने भी यही पूछा था।" बीरबल ने जवाब दिया। जब कभी अकबर को बीरबल की बुद्धि परखने का मौका मिलता, तो वह

उसे न चूकता। एक बार बीरबल कहीं किसी दावत में होकर आया। यह जानकर अकबर ने पूछा। "क्या क्या पकवान बने?"

बीरबल, जो मर्जी आयी, कहता गया और एक एक पकवान का वर्णन करने लगा। एक वर्णन के खतम होने पर "फिर उसके बाद" अकबर से पूछता और उससे यों खूब बातें करवाता। दावत का वर्णन पूरा होने से पहिले ही कोई बात हुई और बात तभी वहीं खतम हो गई।

परन्तु कुछ दिन बाद अकबर को, दावत की बात जो अधूरी रह गई थी, याद आयी। बीरबल को हकाबका करने के लिए अकबर ने उससे पूछा—"तो उसके बाद!"

बीरबल ने बिना झिझके कहा—"उसके बाद भी शाक" अकबर के आनन्द की सीमा न रही। उसके गले में जो मोतियों का हार था, उसे बीरबल को दे दिया।

दरबारियों में कोई एक भी न जान सका कि अकबर के आनन्द का क्या कारण था। क्योंकि बीरबल के मुख से "शाक" शब्द निकलते ही अकबर ने हार दे दिया था, हो न हो अकबर को

"शाक" बहुत पसन्द है। ये घर गये और अपने घर "शाक" बनवाकर, बड़े-बड़े पात्रों में बादशाह के पास भेजा।

यह देख अकबर ने पूछा—"यह सब क्या है!"

"यह जानकर कि आपको शाक पसन्द हैं। हम आपके लिए बनवाकर लाये हैं।" एक दरबारी ने कहा।

वे क्या चाहते थे, अकबर समझ गया। उसने उनसे पूछा—"तुम क्यों बीरबल को देखकर यों जलते हो!" तुमने जाने अनजाने यह किया है, उसके लिए अगर तुम्हें जंजीरों में बाँधकर, जेल में भी डाल दिया गया, तो भी बुरा नहीं है।

दरबारियों ने अकबर के सामने साष्टाङ्ग करके क्षमा माँगी।

एक बार दिल्ली के एक प्रमुख व्यापारी के घर चोरी हुई। इस व्यापारी ने बीरबल के पास जाकर कहा कि चान्दी के मोहरों से भरी उसकी थैली चोरी गई थी। उसके घर में छः नौकर थे। उनमें से किसी एक ने चोरी की होगी, मगर किसने, यह मैं निर्णय नहीं कर पा रहा हूँ। उसने बीरबल की सलाह माँगी।

"आप अपने घर जाकर, अपने छहों नौकरों को भेजिये। मैं यह जानने की कोशिश करूँगा कि कौन चोर है।" बीरबल ने कहा।

व्यापारी के नौकरों के आने से पहिले उसने एक ही लम्बाई की छः लाठियाँ लीं। उनके आते ही वह कहने लगा—"सुनता हूँ, तुममें से किसी ने अपने मालिक का माल चुराया है।"

नौकर उनकी बात पूरी होने से पहिले ही कहने लगे—"हम नहीं जानते, हमें कुछ नहीं मालूम।"

"मैं भला तुमसे क्यों पूछूँ! एक योगी ने मुझे मन्त्रवाली छः लाठियाँ दी हैं, उनकी मदद से मैं ही चोर पकड़ लूँगा। तुम इन लाठियों को ले लो और हमारे घर ही रहो। जो तुम में से चोर होगा। उसकी लाठी एक अंगुल बढ़ेगी और इस तरह मुझे भी मालूम हो जायेगा कि कौन चोर है।" बीरबल ने उनसे कहा।

उस दिन रात को नौकर बीरबल के घर ही सोये। उनमें से जिसने चोरी की थी, वह सो न सका। उसे डर लगने लगा कि उसके पास का लाठी बढ़ रही थी। आखिर उसने एक उपाय सोचा। उसने लाठी में से एक अंगुल काट दिया और निश्चित हो सो गया।

अगले दिन सवेरे बीरबल ने छहों नौकरों को, अपनी अपनी लाठियाँ लेकर आने के लिए कहा—"तुम सब आराम से रात को सोये न! मगर तुमसे कल एक बात गलत कह गया था। कहा था कि जिसने चोरी की थी, उसकी लाठी अंगुल भर बड़ी होगी। यह गलती थी, लाठी अंगुल भर कम होगी, मुझे यह कहना चाहिए था। तुम सब अपनी

लाठियाँ दो। जिसकी लाठी कम हो गई होगी, वही चोर है।"

बीरबल की चाल जानकर चोरी करनेवाले ने मान लिया कि उसने चोरी की थी और उसने चोरी की हुई थैली अपने मालिक को वापिस कर दी।

अकबर न मालूम क्यों अपने बेगम के प्रति उदासीन रहने लगा। बेगम न जान सकी कि क्या बात थी? उसने बीरबल की मदद लेनी चाही।

बीरबल को अन्तःपुर में आने जाने की अनुमति थी। उसने ठीक बेगम के पास जाकर पूछा—"आप मुझ से क्या मदद चाहती हैं?"

"न मालूम क्यों बादशाह मुझ से नाराज हैं? बहुत माथापच्ची की मगर कारण नहीं मालूम हो रहा है। अगर कारण पता लग जाये, तो माफ़ी माँग लूँगी।"

"नाराज हैं, तो उन्होंने क्या किया है? क्या कुछ कहा है?"

"कुछ नहीं करते। कुछ नहीं कहते। यही तो आफत है।" बेगम ने कहा।

"आप कैसे जानते हैं कि वे नाराज हैं।" बीरबल ने पूछा।

"मेरी तबीयत ठीक नहीं है। हकीम दवा दे रहा है। मेरे लिए खास खाना तैयार करने के लिए, सेवा करने के लिए चार दासियाँ हैं। इससे पहिले जब कभी मैं बीमार होती तो वे दवा मंगाते और मेरे मना करने पर भी खिलाते। मेरी तबीयत के बारे में रह रहकर पूछा करते। अब कह रहे हैं कि मुझे कोई बीमारी ही नहीं है और मेरी सेवा शुश्रूषा भी अनावश्यक है।" बेगम ने कहा।

यह सुन बीरबल को आश्चर्य हुआ क्योंकि रानी गर्भिणी थी। अब तो वे जो कुछ चाहती हों, दिया जाना चाहिए।

"आप फिक्र न कीजिये, मैं मालूम कर लूँगा कि आखिर बात क्या है!" बीरबल ने कहा।

उस दिन शाम को बीरबल अकबर के साथ टहलने गया। बीरबल ने यूँ ही बातों बातों में पूछा कि बेगम की तबीयत कैसी थी।

अकबर ने बीरबल की ओर मुड़कर कहा—"कुछ दिन पहिले मैंने एक अजीब बात देखी उस बाग में, मैं टहल रहा था कि एक बड़ के पेड़ के नीचे एक भीलनी दिखाई दी। मैं चकित ही था कि वह वहाँ क्या कर रही थी कि उसने एक बच्चे को जन्म दिया। उसे पोंछ पौंछकर टोकरे में रखकर इस तरह चली गई, जैसे कुछ हुआ ही न हो। इससे मैंने एक सबक सीखा। हम अपनी स्त्रियों के बारे में इतनी फिक्र करके, उनकी तरह तरह से परवाह करके, गल्ती कर रहे हैं। सच कहा जाय, तो यह सब फिजूल है।"

बीरबल सब जान गया। उसने अगले दिन ही बेगम के दर्शन किये और जो कुछ सलाह देनी थी, दी। उसके जाते

ही उसने बाग के माली को बुलाकर कहा—"आज से तुम महल के किसी भी पौधे को पानी मत दो। यह मेरी आज्ञा है।"

"पौधे सूख जायेंगे।" माली ने कहा।

"सूखने दो! बादशाह अगर तुम से कुछ पूछें तो कहना कि मेरी आज्ञा हुई है। यह मेरी जिम्मेवारी रही कि तुम्हें कोई सजा न मिले।" बेगम ने कहा।

एक हफ्ताह बाद, अकबर उबला उबला बेगम के पास आया। "क्यों तुमने कहा कि फूल के पौधों को पानी न दिया जाय? अगर वह यह न कहता कि तुम्हारी आज्ञा हुई है, तो उसका सिर अब तक कट गया होता। क्यों तुम ने यह ऊँटपटांग हुक्म दिया?"

"ऐसी बात नहीं कि इसके पीछे कोई वजह नहीं है। कुछ दिन पहले मैं जंगल में गई; वहाँ मैंने एक अजीब बात देखी। वहाँ, बड़े बड़े पेड़, फल और फूलों से लदे पड़े थे। जब मैंने पूछताछ की तो पता लगा कि उस जंगल का कोई माली ही नहीं है और उन पेड़ों को कोई पानी नहीं देता है। उस हालत में, क्यों महल में एक माली रखा जाये? क्यों यहाँ के पौधों को पानी दिया जाये—मैंने सोचा।" बेगम ने कहा।

"जंगली पेड़ और फूल के पौधों में क्या समानता है?" अकबर ने पूछा।

"तो क्या समानता भीलनी और बेगम में ही है?" रानी ने पूछा।

"तो यह बात है? यह सब तुम्हें बीरबल ने बताया था न?" अकबर ने पूछा। तब से जो कुछ सेवा शुश्रूषा रानी की की जानी चाहिए थी, अकबर ने करवाई।

मधु की शिक्षा

एक गाँव में मधु नाम का लड़का रहा करता था। छुटपन में ही उसका पिता गुजर गया था, उसकी माँ ने ही उसको नाना कष्ट सहकर अच्छी तरह पाला पोसा था।

हर किसी की मदद करना मधु को बहुत भाता था। अड़ोस पड़ोस के लोगों को, परिचितों को, अपरिचितों को, यात्रियों को, जब कभी मदद ही जरूरत होती तो वह सन्तोष से करता। वह जब औरों की मदद कर रहा होता, तो अपने को ही भूल जाता। इसलिए गाँव भर के लिए वह बिना वेतन का नौकर-सा हो गया। उसे गाँव में सब परोपकारी मधु कह कर पुकारा करते।

क्योंकि हमेशा वह किसी का कोई न कोई काम करता रहता था, मधु अच्छा कामकाजी हो गया। यही नहीं, जो कोई उससे मदद पाता था तो उसके हाथ में कोई खाने की चीज रखता, नहीं तो दो चार पैसे दे जाता। यदि कोई न देता, तो वह न माँगता और यदि देता तो ले लेता। यह सब देख उसकी माँ ने सोचा कि उसका लड़का सफल होगा।

परन्तु होते होते मधु की परोपकार की प्रकृति के कारण अनर्थ भी होने लगा। वह रोज पानी के लिए तालाब जाया करता। वहाँ उससे कोई बूढ़ा, या बूढ़ी यदि पूछा करती "जरा इस घड़े को तो उठवा दो" तो मधु कहा करता—"क्यों? मैं ही इसे आपके घर ले आऊँगा।" यह कह वह अपना घड़ा वहीं छोड़ देता, उनका घड़ा उनके घर तक ले जाता।

यह देख मधु की माँ ने उससे कहा—"तुम हमेशा दूसरों की सहायता करते

रहते हो, दूसरों को भी तो तुम्हारी सहायता करनी चाहिए। अगर तुम्हारी मेहनत का कोई फल नहीं हो, तो क्या लाभ!"

"जब उनके पास ही कुछ न हो, तो हमें क्या देंगे!" मधु ने कहा।

एक दिन उत्थान द्वादशी के अवसर पर उसकी माँ ने सवेरे दोसे और खीर बनाने की सोची। उसने मधु को पैसे देकर कहा— "तुम गुड़ और इलाइची ले आओ।"

मधु दुकान जा रहा था, बनवारीलाल गली में चबूतरे पर बैठा था। उसने मधु को देखते ही कहा—"मधु थोड़ी मदद करनी होगी। हमारी नौकरानी रामी नहीं आयी है। उसकी झोंपड़ी में जाकर कहो कि मैंने उसे बुलाया है।"

वह रामी दो घरों में दूध दिया करती थी। सवेरे ही दूध दुहकर दो घरों में देकर बनवारीलाल के घर काम करने जाया करती। पर उस दिन दूध दुहने में कुछ देरी हो गई। मधु ने आकर कहा— "बनवारीलाल बुला रहे हैं।" तभी उसने दूध दुहना समाप्त किया था।

"हाँ भाई, आज गौ जरा अकड़ गई थी। दूध दुहने में देरी हो गई। तुम दूध
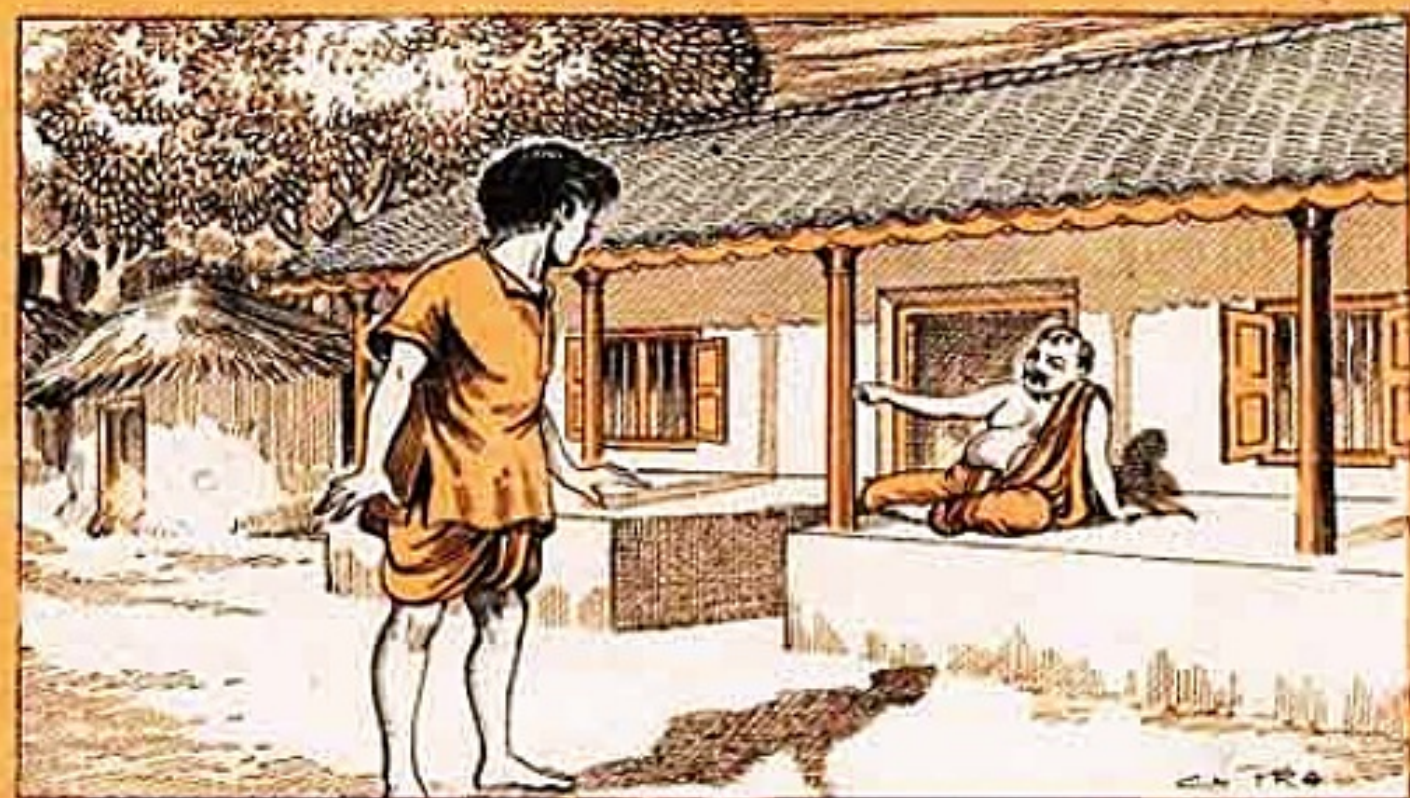
मेरे दो घरों में दे आओगे, तो मैं अभी बनवारीलाल के यहाँ हो आऊँगी।" रामी ने कहा। यह सोच इधर रामी की मदद हो जायेगी और उधर बनवारीलाल का भला मधु ने दोनों घरों में दूध पहुँचा दिया। वह दूध देकर वापिस आ रहा था कि सिर पर बड़ा-सा गट्ठर लादे हाँफता हाँफता, पुरोहित शर्मा दिखाई दिया।

"अरे भाई एकदम वक्त पर दिखाई दिये। मैं भार उठा नहीं पा रहा हूँ। जरा यह गट्ठर हमारे घर तक तो पहुँचा दो। तुम्हारा भला होगा।"

"दीजिये" कहकर मधु उसका गट्ठर उसके घर तक ढोकर ले गया, वहाँ से दुकान गया।

इससे पहिले ही पटवारी ने वहाँ एक बोरा गेहूँ खरीद रखा था, उसे घर पहुँचाने के लिए कुली की इन्तजार कर रहा था। उसने मधु को देखते ही "अरे भाई मधु कुली नहीं मिला। जरा यह गेहूँ का बोरा हमारे घर तक तो पहुँचा दो। खाना बन गया होगा। खाना खाकर जाना।"

मधु ने पटवारी के घर गेहूँ पहुँचा दिया। वहीं उसने भोजन कर लिया। भूख

बुझ गई थी। वह इधर उधर के परोपकार करता, किसी काम पर अपने घर की ओर गया। माँ ने उसको बुलाकर कहा— "अरे सवेरे गये थे, कहाँ है दाल, गुड़ और इलाईची! लाये कि नहीं!"

"अभी लाये देता हूँ।" मधु ने कहा।

"द्वादशी का समय बीत जाने के बाद अब लाने से क्या फायदा है!" माँ ने उसको खूब फटकारा।

इस घटना के बाद, माँ, अपने लड़के, मधु के बारे में बड़ी चिन्तित रहने लगी। यह सोच कि यदि इसका यही रवैय्या रहा, तो यह किसी काम का नहीं रहेगा, उसने जान पहिचानवालों की सलाह माँगी।

बड़ों ने सलाह दी। "किसी अच्छे गुरु के पास पढ़ने भेजो। मधु सुधर जायेगा। यह करो।" कोणगिरि में एक गुरु था। मधु की माँ ने उसको वहाँ भेजने का निश्चय किया। मधु भी यह सोच खुश था कि उसे नये लोगों में घूमने फिरने का मौका मिलेगा, वहाँ जाने के लिए उतावला हो रहा था।

गुरु जल्दी ही जान गया कि मधु काम करने में बड़ा आनन्द लेता था। उसने तीन वर्ष तक मधु से इधर उधर के सब काम करवाये। उसे अक्षर ज्ञान करवाया। उसने उसको ये सूक्तियाँ भी बतायीं। "परोपकारार्थं इदं शरीरं" परोपकारार्थं यो जीवति स जीवति "उपकार परोधर्मः।" फिर उससे कहा—"जाओ, तुम्हारी पढ़ाई खतम हो गई।" उसने उसे भेज दिया।

[अगले अंक में राज सम्मान]
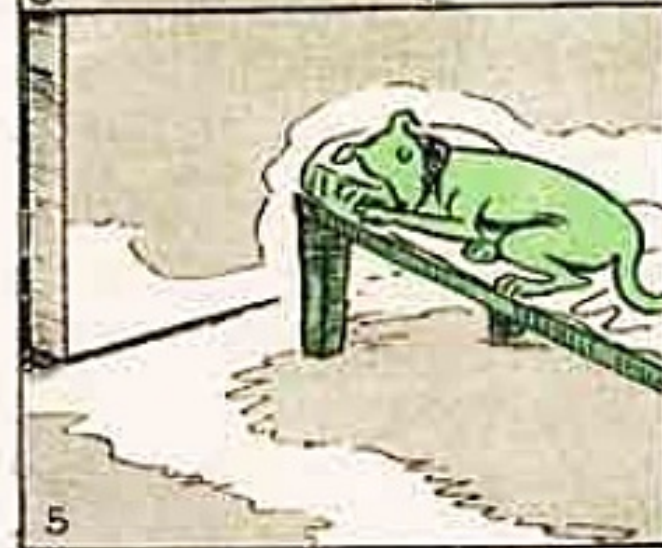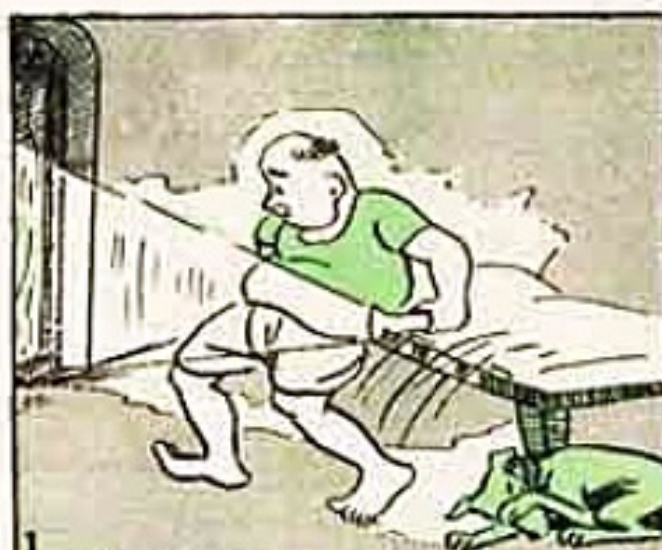
साल में एक झूठ

एक बड़े किसान को एक अच्छे नौकर की ज़रूरत हुई। पता लगा कि उसी के गाँव में एक किसान का मेहनती लड़का था। उसने किसान को बुलवाया।

"कोई ऐसा काम नहीं है, जो हमारा लड़का न कर सके। घर का काम दीजिये; गौवों का काम दीजिये; खेत का काम दीजिए; वह सब काम अच्छी तरह कर सकता है। पर उसकी एक ही कमी है। साल में एक बार झूठ बोलता है। अगर आपको यह स्वीकार हो तो उसको रख लीजिये।" किसान ने कहा।

"यदि वह साल में एक ही बार झूठ बोलता है, तो वह सत्य हरिश्चन्द्र है। कौन ऐसा है जो हर रोज़ दस बार झूठ न बोलता हो।" कहकर बड़े किसान ने उस लड़के को काम पर रख लिया।

नया नौकर अच्छा काम करनेवाला था। बड़ा चुस्त। दो तीन का काम वह अकेला करता। बड़ा किसान उसे देख खुश हुआ। वह झूठ बोलना भी भूल गया। चूँकि कई महीने हो गये थे और उसके मुख से एक झूठ नहीं निकला था।

नव वर्ष आया। बड़े किसान के बाग में खूब फल हुए। बाग में कुछ काम करवाने के लिए बड़ा किसान जा रहा था कि उसे याद आया कि घर पर वह कुछ छोड़ आया था। उसने उसे लाने के लिए अपने नौकर को भेजा। किसान का घर पास ही था कि वह ज़ोर ज़ोर से रोने लगा। लोग जमा हो गये। किसान की पत्नी अपने बच्चों के साथ बाहर आई— "क्यों, क्या हुआ!" उसने चिन्तित हो पूछा।

"मालिक! बाग, घर की चार दीवारी...." वह और जोर से रोने लगा।

"क्या हुआ! कहीं दीवार उनपर गिर तो नहीं गई है!" चार-पाँच ने पूछा। वह और जोर से रोया। उसके साथ और भी रोने लगे। "क्या तुम्हारा मालिक जिन्दा है?" उन लोगों ने पूछा। "तभी सब कुछ खतम हो गया था।" नौकर ने कहा।

मालकिन रोने लगी। अपनी चूड़ियाँ तोड़ दीं। सिर के बाल नोंचने लगी। अपनी कीमती साड़ियाँ शोक में फाड़ बैठी। बच्चे भी रोये। दीवार के नीचे से शव को निकालने के लिए लोग फावड़े आदि लेकर निकले। उनके साथ किसान की पत्नी और बच्चे भी गये। उनसे पहिले ही नौकर बाग में भागा भागा गया। रास्ते में उसने सिर पर धूल डाल ली। "मालिक....मालकिन! अब कहाँ रही मालकिन!" जोर जोर से रोने लगा।

उसको देखते ही किसान ठंडा हो गया।

"क्यों रो रहे हो, मालकिन को क्या हो गया है?" उसने पूछा।

"केवल मालकिन ही? बच्चों का भी काम तमाम हो गया है। घर टूटकर

सब पर गिर गया है। वे अब हमारे संसार में नहीं है। उनको मैं देख नहीं सका....भागा चला आया हूँ।" नौकर ने रोते रोते कहा। किसान के पैर काँपने लगे। गिरता पड़ता घर की ओर निकला। आधे रास्ते में उसकी पत्नी और बच्चे मिले।

"अरे हो भला भगवान का। तुम जिन्दे हो!" किसान की पत्नी ने कहा। पति को देखते ही उसका शोक जाता रहा।

"अरे तुम! मैं डर गया था कि कहीं तुम्हारे शव न देखने पड़ जायें। किसने बताया था कि मैं जिन्दा नहीं हूँ।" किसान ने कहा।

"इस दुष्ट नौकर ने ही।" पत्नी ने कहा।

"अरे, इसी ने बताया था कि तुम सब इस संसार में नहीं हो, तुम सब पर घर की छत गिर पड़ी है, कह रहा था।" बड़े किसान ने कहा। उसने नौकर को पकड़कर कहा—"चोर कहीं का। कितनी आफ़त तुमने तैयार कर दी। देख, तुम्हारी क्या गत बनाता हूँ।"

"आप मेरा कुछ नहीं कर सकते। मेरे पिता ने आपसे पहिले ही कहा था कि मैं साल में एक बार झूठ बोलता हूँ। आपने यह मान भी लिया था। यही नहीं, मैंने इस साल आधा झूठ ही बोला है। चाहें तो आप पूछकर देख लीजिये।" नौकर ने कहा।

"अरे जाय भाड़ में तेरा आधा झूठ! उस आधे झूठ ने सारे गाँव को झकझोर दिया। अगर पूरा झूठ बोलते तो न मालूम क्या आफ़त आती!" कहकर बड़े किसान ने नौकर को काम पर से निकाल दिया।

अयोध्या काण्ड

गुह ने भरत से कहने को तो कह दिया था कि वह उसकी मदद करेगा, पर उसे सन्देह बींध रहा था, उसने भरत से कहा—"आपकी सेना आदि देखकर मुझे सन्देह हो रहा है। कहीं आप राम पर आक्रमण करने तो नहीं जा रहे हैं?"

यह सुन भरत ने कहा—"तुम्हें यह सन्देह हुआ, इससे बढ़कर मेरे लिये कष्टदायक कोई बात नहीं है। मेरा बड़ा भाई मेरे लिये पिता के समान है। मैं राम को लिवा लाने के लिए ही जा रहा हूँ। मेरी बात का विश्वास करो।"

"अच्छी बात रही, आपकी तरह हाथ में आये हुए राज्य को खो बैठनेवाले कितने हैं? आपकी कीर्ति अमर रहेगी।" गुह ने कहा।

सूर्यास्त हो गया, अन्धकार छा गया। उस दिन रात भरत शत्रुघ्न ने राम के बारे में बहुत दुःख अनुभव किया। उनके साथ के गुह ने उनको आश्वासन दिया। उसने लक्ष्मण की खूब प्रशंसा की।

"राम जब सोते, तो वे जागे रहते, हमने कहा कि हम जागेंगे, राम को कोई हानि न होने देंगे, हम उनकी रक्षा करेंगे। हमने उन्हें भी सोने के लिए कहा। पर उन्होंने एक न सुनी। राम ने कहा कि सीता को

कठोर भूमि पर सोता देख ही उन्हें नींद न आ रही थी। राम के बगैर क्या दशरथ एक दिन भी जीयेंगे! उन्होंने सोचा था कि चौदह साल वन में रहकर, फिर अयोध्या वापिस चले आयेंगे। इस बड़ के वृक्ष के नीचे ही राम लक्ष्मण ने जटा-जूट पहिने थे। सबेरे होने पर मैंने ही उनको गंगा पार लगाया था।"

गुह जब यों कह रहा था, तो भरत का दुख बढ़ता जाता था। कौशल्या, सुमित्रा, कैकेयी उस जगह आईं, जहाँ वे थे। गुह ने उनसे भी राम के बारे जो वह जानता था, कहा। उसने वह जगह भी दिखाई, जहाँ राम और सीता उस दिन सोये थे। भरत यह कल्पना भी न कर सका कि दशरथ के पुत्र और पुत्र वधू घास-पत्तों के बिस्तर पर सोये थे।

रात के बीत जाने के बाद गुह ने आकर भरत को नमस्कार करके पूछा—"रात आराम से कटी कि नहीं?"

"कोई कमी न थी, हमें जल्दी नदी पार लगवाओ।" भरत ने कहा।

गुह ने पाँच सौ नौकायें और स्वस्तिक नामक बढ़िया नौकायें तैयार करवाईं। सफ़ेद कालीन बिछे हुए एक स्वस्तिक में भरत, शत्रुघ्न, वशिष्ठ और राजा की पत्नियाँ सवार हुईं। भरत की सेना, रथ और गाड़ियाँ और उनको खींचनेवाले जानवर, सब नावों पर चढ़ा दिये गये।

नौकायें नदी पार कर गईं, हाथियों ने भी तैरकर नदी पार की। कुछ तमेड़ में और कुछ घड़ों के सहारे नदी पार गये।

भरत सेना के साथ प्रयाग वन में पहुँचा। वशिष्ठ आदि की सलाह पर, वह भारद्वाज महर्षि को देखने निकला।

भरद्वाज ऋषि का आश्रम, अभी कोस-भर दूर था कि सारी सेना रुक गई। भरत ने अपने आयुध, आभूषण उतार दिये। रेशम के कपड़े पहिनकर, वशिष्ठ और मन्त्रियों को साथ लेकर आश्रम में गया। मन्त्री आश्रम में ही रह गये। वशिष्ठ और भरत भारद्वाज के कुटीर में गये। उनको देखते ही भरद्वाज यह कहता उठा—"अर्घ्य लाओ।"

वशिष्ठ ने भरत का परिचय कराया। क्षेम समाचार जानने के बाद भारद्वाज ने कहा—"तुम राज्य जो करते, क्यों इस तरफ़ चले आये! उसे भी सन्देह हुआ कि भरत, राम की हानि करने आया था। पर कह न पाया।

भरत को यह सुनकर बड़ा दुःख हुआ। जो उसने गुह से कहा था, वह भरद्वाज से भी कहा। सब सुनकर, सन्तुष्ट होकर, भारद्वाज ने कहा—"सीता, राम और लक्ष्मण चित्रकूट में हैं। आज यहीं रहो, कल चले जाना।" भरत इसके लिए मान गया।

"मैं तुम्हारी सब सेनाओं को सहभोज देना चाहता हूँ। उन सबको तुमने दूर क्यों रखा! उनको भी साथ लाना चाहिए था।" भारद्वाज ने कहा।

"महात्मा, सेना को मुनियों के आश्रम से दूर ही रखना चाहिए, इस नियम का पालन करके मैंने उन्हें दूर ही रखा है।" भरत ने सविनय कहा।

"कोई बात नहीं, तुम अपनी सेना को बुलाओ।" उसने भरत से कहा।

भारद्वाज ने अपने अतिथियों का खूब आतिथ्य किया। विश्वकर्मा ने क्षण में उनके रहने का प्रबन्ध किया। नदियों ने आकर उनको मद्य आदि

ब्रह्मा, कुबेर और देवेन्द्र ने बीस बीस हज़ार अप्सरायें भेजीं। भरत जब यों राजसभा में था, नारथ और तम्बुर, गोपुल नाम के गान्धर्व राजाओं ने गान किया। अलम्बस, मिश्रकेशी, पुण्डरीक, वायन नायक अप्सराओं ने भरत के समक्ष नृत्य किया।

भरद्वाज आश्रम के वृक्ष और पौधों और बेलों ने स्त्रियों का रूप धारण किया और सैनिकों को स्नान करवाया।

उन्होंने उनसे जी भरके पीने और खाने के लिए कहा। सैनिकों को कोई कमी न थी। वे खूब पी-पाकर होश भूले बैठे थे। वे कहने लगे—"हम अयोध्या नहीं जायेंगे। दण्डकारण्य भी नहीं जायेंगे। यहीं रहेंगे। राम और भरत का भला हो।"

कुछ ने कहा—"स्वर्ग है तो यही है।" वे मालायें पहिनकर इधर उधर उछल कूद करने लगे। गाने लगे। नाचने लगे। तरह तरह के पकवान और पेय खा खाकर भी उनका पेट नहीं भरा।

वह रात इस तरह गुज़र गई। अगले दिन भरत ने भरद्वाज के दर्शन करके

दिया। दिक्पालकों को बुलाया गया। संगीत के लिए, विश्वावसु और हाहा हूहू नामक गन्धर्व बुलाये गये। कई अप्सरायें बुलाई गईं। चन्द्रमा ने आकर, पुष्प मालायें, पेय और मांस आदि तैयार करवाये।

मय ने जो अद्भुत गृह बनवाया था, उसी में एक राजमहल-सा भरत के लिए अलग दिया गया, उसमें वह सिंहासन पर नहीं बैठा। उसने मन्त्रियों के आसन पर बैठकर अपने कर्मचारियों और गुह को यथोचित स्थान पर बिठाया।

"तुम यह कभी न सोचो कि यदि वन में राम गया है, तो कैकेयी के कारण नहीं। इसके कारण आगे बहुत-से लाभ होंगे।

फिर भरत भारद्वाज यथोचित विदा लेकर, सेना के साथ चित्रकूट के लिए निकल पड़ा। वे मन्दाकिनी नदी के पास गये, उसके दक्षिण में चित्रकूट पर्वत के पास पहुँच रहे थे कि भरत ने यह जानने के लिए सैनिक भेजे कि राम-लक्ष्मण कहाँ थे। कुछ सैनिक जंगल में गये। कहीं से धुँआ आता देख, उन्होंने यह आकर भरत से कहा।

आतिथ्य के लिए कृतज्ञता दिखाकर, राम के पास जाने का मार्ग पूछा।

"चित्रकूट जाने के लिए दक्षिण से नैऋति से एक और मार्ग है। सैनिकों के जाने के लिए जो योग्य हो, उसी मार्ग से जाओ।" भारद्वाज ने सलाह दी।

दशरथ की तीनों पत्नियों ने मुनि को नमस्कार किया। भरत ने उनका उचित रीति से परिचय करवाया। जब वह अपनी माँ का परिचय करा रहा था, तो उसने कठोर शब्द उपयोग किये। वह गुस्से में आ गया। यह देख भारद्वाज ने कहा—

जहाँ से यह धुँआ आ रहा है, वहाँ कोई अवश्य है। वे राम लक्ष्मण ही होंगे। या कोई ऐसे लोग होंगे, जो राम लक्ष्मण का पता जानते होंगे। भरत ने सेना को शान्त रहने के लिए कहा। सुमन्त और वशिष्ठ को साथ लेकर, जिस दिशा की ओर जाने के लिए सैनिकों ने बताया था, उस ओर चलने लगे।

* * *

चित्रकूट में आये राम को एक मास हो गया था। उस दिन पर्णशाला को छोड़कर, सीता के साथ पहाड़ पर घूमने

के लिए वे जा रहे थे। चित्रकूट पर्वत बड़ा सुन्दर है। वहाँ के पेड़, पशु, पक्षी तरह तरह की धातुयें, पास में बहती मन्दाकिनी, मनोहर दृश्यों को देखकर, वे बहुत देर तक घूमते रहे।

राम ने सीता से कहा—"तुम और लक्ष्मण मेरे साथ हो, तो इन इन दृश्यों को देखता, आनन्द लेता, कितने ही वर्ष यहाँ रह सकता हूँ।"

इस तरह बहुत दिन घूमने के बाद सीता, राम, लक्ष्मण एक जगह बैठ गये। उस समय उनको भागते हाथी दिखाई दिये। उनकी चिंघाड़ से ऐसा लगता था, जैसे वे डरकर भागे जा रहे हों। सचमुच वे भरत की सेना देखकर डर गये थे। राम ने लक्ष्मण से कहा—"देखो लक्ष्मण, हाथी और शेर भी भागे जा रहे हैं। क्या कोई राजा शिकार कर रहा है। या इन क्रूर जन्तुओं से भी भयंकर जन्तु आ गया है? देखो, तो क्या बात है।"

लक्ष्मण ने जब ऊँचे से पेड़ पर चढ़कर देखा, तो उत्तर दिशा की ओर बड़ी सेना दिखाई दी। उसने राम से कहा—"कोई सेना हमारी तरफ़ आती मालूम होती है। सीता को गुफा में रखकर कवच पहिनकर, धनुष-बाण ले लो।"

"ठीक तरह देखो लक्ष्मण, यह किसकी सेना मालूम होती है?" राम ने पूछा।

लक्ष्मण ने सेना के रथों की पताकायें पहिचान कर—"भरत माँ के कहने पर, पट्टाभिषेक करकर भी सन्तुष्ट नहीं हुआ—अपने राज्य को निष्कंटक करने के लिए हम पर आक्रमण करने आ रहा है। हम आओ, पर्वत पर छुप जायें। नहीं तो युद्ध के लिए सन्नद्ध हो जायें।" राम से कहा।

वह कहता गया—"अब भरत हमारे हाथ आ जायेगा—जिसके कारण हम इतने कष्ट झेल रहे हैं, मैं उस भरत को मारकर रहूँगा। इसमें कोई अनुचित बात नहीं है। यहीं भरत के मर जाने पर तुम अच्छी तरह राज्य कर सकोगे। कैकेयी, मन्थरा और उनके लोगों को भी मार दूँगा। इस तरह के पापी जीकर भी क्या करेंगे!"

यह सुनकर राम ने अपने भाई को फटकार बताई—"भरत अपने आप हमें देखने आ रहा है और तुम कह रहे हो कि वह हम से युद्ध करने आ रहा है। पिता की आज्ञा पर यहाँ आये हुए मुझे मारकर क्यों भरत को बदनाम होने के लिए कहते हो, क्या इतनी सी बात पर कहीं पिता और भाई को मारा जाता है! भरत पर तुम क्यों सन्देह कर रहे हो! क्या उसने कभी कोई ऐसी बात कही, जिस पर सन्देह किया जा सके? वह मामा के घर से अयोध्या आया होगा, हमारी बात मालूम करके, हमें फिर वापिस ले जाने के लिए आ रहा है, ऐसा मेरा विश्वास है, अगर तुम राज्य चाहते हो, तो बताओ। भरत के आते ही उससे कहूँगा कि राज्य तुम्हें दे दे। वह मेरी बात नहीं ठुकरायेगा।"

यह सुन लक्ष्मण शर्मिन्दा हुआ। सिर झुकाकर उसने कहा—"हो सकता है कि हमारे पिता ही हमें देखने आ रहे हों।" उसने बात बदली।

राम ने लक्ष्मण को पेड़ पर से उतर आने के लिए कहा और वह उतर आया।

ऐफिल टाउर

१८८९ में पेरिस में एक बहुत बड़ी प्रदर्शनी हुई। उस समय ऐफिल नामक एक इन्जनीयर ने इसका निर्माण किया। इसकी ऊँचाई ९८४ फीट है। यूरुप में इससे ऊँचा कोई भवन नहीं है। इसकी चोटी से ६० मील दूर तक देखा जा सकता है।

१. सुनित कुमार बोस, मुजफ्फरपुर

क्या आप अंग्रेजी साहित्य के महान लेखक शेक्सपीयर की लिखी "एज यू लाइक इट" और "ओथेलो" छाप सकते हैं?

हम इनका कथा सार दे चुके हैं।

२. सुरजीत सिंह सिख, चित्तौड़गढ़

क्या सब भाषाओं की "चन्दामामा" में हमारे द्वारा भेजे गये प्रश्न छपते हैं?

नहीं—जो जिस भाषा में प्रश्न भेजता है, उसके उत्तर उसी भाषा के "चन्दामामा" में दिये जाते हैं।

३. शिव कुमार कानू, डिब्रूगढ़

आप सभी प्रश्नों का उत्तर देते हैं?

नहीं, उन्हींका जिनका उत्तर दिया जा सकता है—कहने का मतलब यह कि हमारे पास कई ऐसे प्रश्न भी आते हैं, जिनका उत्तर सम्भव नहीं है।

भारत का इतिहास कब तक चलेगा?

अभी तो शुरु ही हुआ है।

४. दिनेश बाबूलाल क्षीरसागर, धार्णी

गोल मटोल भीम के समाप्त होते ही आप कौन-सी कहानी छापेंगे?

छापनी शुरु कर दी है, गौर कीजिए।

५. रवि कौशल, कानपुर

"चन्दामामा" में जो "काँसे का किला" और "तीन मान्त्रिक" धारावाहिक कहानियाँ निकल चुकी हैं—कहाँ मिलेंगी और उनका पता क्या है?

वे पुस्तकाकार में नहीं निकली हैं—इसलिये "चन्दामामा" की पुरानी प्रतियों में ही मिल सकती हैं।

६. अशोक कुमार गोयल, बम्बई

आप अन्तिम पृष्ठ की कहानी लिखते हैं, लेकिन पहिले पृष्ठ की क्यों नहीं?

लिखते हैं, आजकल रामायण की कहानी का चित्र मुख-पृष्ठ पर जा रहा है और कहानी अन्दर।

७. नारायण डी. लालवाणी, बम्बई

आप "चन्दामामा" में अकबर और बीरबल की कहानियाँ क्यों नहीं प्रकाशित करते?

कर रहे हैं।

क्या आपने किसी पद्य-कथा को पुस्तकाकार दिया है?

हिन्दी में अभी तो नहीं।

८. विजयनारायण शर्मा, कुलरी

क्या आप "चन्दामामा" में मुगल राजाओं की भी कहानियाँ छापेंगे?

यदि ऐसी कहानियाँ मिलीं तो अवश्य।

९. उदयकुमार, बम्बई

"चन्दामामा" क्या विद्यार्थियों के लिए कम चन्दे पर भेजा जाता है?

नहीं।

Photo by P. R. Shinde

पुरस्कृत
परिचयोक्ति

मेरा घोड़ा बड़ा है अच्छा,
कभी नहीं खाता सोटी !

प्रेषक :
स्वतन्त्रभूषण गैरोला - दिल्ली

Photo by A. M. Hussain

पुरस्कृत
परिचयोक्ति

बिल्ली मौसी सोच रही है,
कब आए मुँह में रोटी !!

प्रेषक :
स्वतन्त्रभूषण गैरोला - दिल्ली

दो पत्नियाँ और पति ★

[रामतीर्थ कथा]

एक रईस की दो पत्नियाँ थीं। बड़ी पत्नी पहिले मंजिल पर रहा करती और दूसरी नीचे।

उस रईस के घर चोर ने चोरी करने की सोची और वह पकड़ा गया। चोर को पोलीस ने मेजिस्ट्रेट के सामने पेश किया। चोर ने यद्यपि कुछ चोरी न की थी, तो भी वह मान गया कि उसने चोरी करने की कोशिश की थी।

"इसलिए ही तुम्हें सज़ा देनी होगी।" मेजिस्ट्रेट ने कहा।

"हुजूर, भाई, आप जो चाहें सज़ा दें, पर यह न सज़ा दें कि मैं दो पत्नियों को ब्याहूँ।" चोर ने निवेदन किया।

मेजिस्ट्रेट ने चकित होकर पूछा—"यह क्यों?"

"हुजूर, मालूम है, मैं कैसे पकड़ा गया था। जब मैं यह सोच कर कि सब उस घर में सो गये होंगे, उस घर में घुसा तो घर का मालिक घर की सीढ़ियों पर खड़ा था। एक पत्नी उसको ऊपर खींच रही थी और दूसरी नीचे। कोई भी उसे न छोड़ रही थी। यह शामत दुश्मन को भी न आये।" चोर ने कहा।

फ़ोटो - परिचयोक्ति - प्रतियोगिता

अगस्त १९६२ :: पारितोषिक १०)

कृपया परिचयोक्तियाँ कार्ड पर ही भेजें।

ऊपर के फ़ोटो के लिए उपयुक्त परिचयोक्तियाँ चाहिए। परिचयोक्तियाँ दो तीन शब्द की हों और परस्पर संबन्धित हों। परिचयोक्तियाँ पूरे नाम और पते के साथ कार्ड पर ही लिख कर निम्नलिखित पते पर तारीख ७ जुलै १९६२ के अन्दर भेजनी चाहिए।

फ़ोटो - परिचयोक्ति - प्रतियोगिता
चन्दामामा प्रकाशन,
वडपलनी, मद्रास-२६

जुलै – प्रतियोगिता – फल

जुलै के फ़ोटो के लिए निम्नलिखित परिचयोक्तियाँ चुनी गई हैं।
इनके प्रेषक को १० रु. का पुरस्कार मिलेगा।

पहिला फ़ोटो : मेरा घोड़ा बड़ा बड़ा है अच्छा, कभी नहीं खाता लोटी !

दूसरा फ़ोटो : बिल्ली मौसी सोच रही है, कब आए मुँह में रोटी !!

प्रेषक : स्वतन्त्रभूषण गैरोला,
C/O श्री दर्शनानन्द गैरोला, बी १३/९७ देवनगर, करोल बाग, दिल्ली–५

अन्तिम पृष्ठ

गान्धारी पुत्र शोक में विह्वल थी। युधिष्ठिर के दीखते ही उसने उसको शाप देने का निश्चय किया। व्यास यह जान गया, इसलिए उसने उसके पास जाकर कहा—"युधिष्ठिर पर यों बदला न लो। जब तुम्हारा लड़का युद्ध के लिए जा रहा था, तब तुमने कहा था कि जहाँ धर्म होता है, वहीं विजय होती है। क्यों नहीं सोचती कि धर्म पाण्डवों के साथ था, इसलिए वे जीत गये।"

"मैं नहीं चाहती कि पाण्डवों का नाश हो। परन्तु पुत्रों के शोक ने मुझे बाध्य कर दिया है। दुर्योधन दुश्शासन, शकुनि, कर्ण आदि की गलतियों के कारण कुरु वंश का क्षय हो गया। इसके लिए मैं किसी की निन्दा नहीं करती। परन्तु गदा युद्ध में कुशल दुर्योधन को नाभी के नीचे भीम का मारना मैं नहीं सह सकती!" गान्धारी ने कहा।

यह सुन भीम ने गान्धारी से कहा—"माँ, मैंने अपने प्राणों की रक्षा की है, मैंने धर्म और अधर्म की बात नहीं सोची। धर्म-युद्ध में मैंने तुम्हारे लड़के को नहीं मारा है। मुझे माफ़ करो। उससे पहिले तुम्हारे लड़के ने हमारे बड़े भाई को अन्याय से हराया था। हम पर तरह तरह के अत्याचार किये। द्रौपदी का अपमान किया। यह सब तुम जानती ही हो।"

गान्धारी ने भीम से कहा—"तुम्हें यह अन्याय नहीं करना चाहिए था। तुमने दुश्शासन का खून पिया। वह तो राक्षसों का कार्य था।" भीम ने कहा—"माँ, मैंने प्रतिज्ञा पूरी करने के लिए उसके खून से अपने होंठ तर तो ज़रूर किये थे, पर उसे पिया न था। यदि खून पीना ही मेरा लक्ष्य होता तो क्या कर्ण का खून नहीं पीता?"

"युधिष्ठिर कहाँ है?" गान्धारी ने पूछा। युधिष्ठिर ने काँपते हुए कहा—"तेरे सब लड़कों की हत्या करनेवाला युधिष्ठिर यहाँ है।" गान्धारी को आँखों पर बन्धी पट्टी के नीचे से युधिष्ठिर की अंगुलियाँ दिखाई दीं। उनपर उसकी नज़र पड़ते ही, वे झुलस से गये। गान्धारी ने युद्ध भूमि में अपने लड़कों के शवों को देखकर गुस्से में कृष्ण को शाप दिया—"तुम्हारा यादव वंश भी इसी तरह तुम्हारी आँखों के सामने नष्ट हो जाय।"

फिर युधिष्ठिर ने टूटे हुए रथ और लकड़ियाँ इकट्ठी करवाकर चिताएँ बनवाईं और मुख्य योद्धाओं का दहन संस्कार किया। बाकी योद्धाओं को विदुर ने एक ही चिता पर दहन संस्कार करवाया।

जब बाद में वे गंगा में मृत व्यक्तियों के लिए तर्पण कर रहे थे, तो कुन्ती ने पाण्डवों को बताया कि जब वह कन्या थी तो दुर्वासा ने उसे एक मन्त्र सिखाया था। उसका जप कर उसने सूर्य का साक्षात्कार किया था। फिर सूर्य से कहा था—"मुझे तुम अपने सदृश पुत्र प्रदान करो।" उसके बाद कर्ण का जन्म हुआ। यह सब बताकर उसने कहा—"कर्ण तुम्हारा बड़ा भाई है। उसका भी तर्पण करो।" यह सुन युधिष्ठिर बहुत दुखी हुआ।

Printed by B. NAGI REDDI at the B. N. K. Press Private Ltd., and Published by B. VENUGOPAL REDDI for Sarada Binding Works, 2 & 3, Arcot Road, Madras-26. Controlling Editor: 'CHAKRAPANI'